गोघात ! राष्ट्रघात !!

प्रकाशक
गोवंश हत्या एवं मांस निर्यात निरोध परिषद
अ.भा. यांत्रिक कत्लखाने हटाओ समिती
संकट मोचन आश्रम, रामकृष्ण पुरम से. 6, नई दिल्ली - 110 022

॥ गौ ॥

॥ राष्ट्र माता ॥

चित्रमय चेतावनी

सत्यनारायण मौर्य

निवेदन

गाय भारत में सदा से सबकी पूज्य रही है। वैदिक ऋषियों से लेकर बीसवीं शती के सभी सन्तों तक, सभी युगों के सभी मनीषियों ने गाय को 'गोमाता' का पूज्य स्थान देकर उसे मानव मात्र पर अमित उपकार करने वाली और अवध्या बताया है। गोपाल कृष्ण के देश में गोहत्या को जघन्यतम पापों में गिना जाता रहा है। परन्तु, कितने दारुण दुख की बात है कि उसी भारतवर्ष में आज गाय का जीवन सुरक्षित नहीं है। क्षुद्र स्वार्थी वृत्ति ने धर्म, मनुष्यता, कृतज्ञता और उपयोगिता तक के भी सारे विवेक को पैरों तले कुचलकर गोहत्या होने देने में अपना तुच्छ स्वार्थ ढूंढ लिया है। जनमत का आदर करते हुए कुछ मुगल शासकों तक ने विदेश से आये अपने मजहब के उन्मादियों द्वारा गोहत्या किया जाना अनुचित मानकर गोवध पर प्रतिबन्ध लगा दिया था, परंतु 'स्वतन्त्र' भारत के शासकों को, एक छोटे-से वर्ग की अराष्ट्रीय वृत्ति को तुष्ट करने के लिये, राष्ट्र की मुख्यधारा की घोर उपेक्षा करने में कोई संकोच नहीं हो रहा है।

औषधीय गुणों से युक्त दुर्लभ रासायनिक संरचना वाला गाय का दूध पुष्टि और आरोग्य प्रदान करने में अद्वितीय है। जैसे जलों में गंगा-जल, वैसे ही दूधों मे गोदुग्ध भी अपने गुणों के कारण अनुपम है। कृषि-प्रधान देश भारत में गोबर और गोमूत्र की खाद तथा हल चलाने, रहट घुमाने, कोल्हू पेरने और गाड़ी खींचने में बैलों की उपयोगिता का तो कहना ही क्या है? अपने जीवनकाल में ही नहीं, गोवंश मरकर भी चर्म और सींग जैसी वस्तुओं से मनुष्य की सेवा ही करता है। आसन्न ऊर्जा-संकट को देखते हुए, घास खाकर कितने सारे काम करने वाला बैल क्या समस्या के एक बड़े अंश का समाधान नहीं है?

प्रस्तुत चित्र प्रबन्ध में प्राचीनतम काल से ही मान्य गाय की पूजनीयता और अवध्यता, गोपूजा के विविध रूप तथा गाय के प्रति कृतज्ञभाव के कारणों पर प्रकाश डालते हुए गोभक्तों की अनसुनी की जा रही पुकार को पुनः स्वर दिया गया है। इस वाणीको अधिक से अधिक प्रसारित - प्रचारित करने की अपेक्षा के साथ...

के. एल. लोधा	**जस्टिस गुमानलाल लोढ़ा (सांसद)**
महामंत्री	अध्यक्ष
गोवंश हत्या एवं मांस निर्यात निरोध परिषद	अ. भा. यांत्रिक कत्लखाने हटाओ समिति

प्रकाशक

प्रेरणा : विश्व हिंदू परिषद

गोवंश हत्या एवं मांस निरोध परिषद
अ. भा. यांत्रिक कत्लखाने हटाओ
समिति, संकट मोचन आश्रम, रामकृष्ण पुरम से. ६ नई दिल्ली २२.
संपर्क सूत्र : श्री हुकुमचन्द सावला (राष्ट्रीय संगठनमंत्री)
७८४, सुदामानगर, इन्दौर-४५२००९. दूरभाष : ०७३१-४८१४०१
सहयोग राशी - रु. ५/-

मुद्रक : विवेक मुद्रणालय, १२, कामत इंडस्ट्रियल इस्टेट, प्रभादेवी, मुंबई - २५.

॥ आशीर्वचन ॥

गौ हिन्दू संस्कृति और इस सनातन राष्ट्र के मूलधारों में से एक है। गाय उसी प्रकार रक्षणीया है जिसप्रकार हम भूमि और राष्ट्र की रक्षा करते हैं, क्योंकि गाय की रक्षा का अर्थ है अन्तर्बाह्य शुचिता, शक्ति और मनुष्यभाव की रक्षा। वस्तुतः हमारा जीवन और परम्परायें गाय से गुंथी हुई हैं। इसीलिये भगवानने स्वयं अपने अवतार कार्यों में गौ रक्षा की उद्घोषणा की। किन्तु दुर्भाग्य से यह समाज धीरे धीरे गौ माता के महत्व और कृतज्ञता को विस्मृत करता गया और इसी के साथ स्वातंत्र्य काल में कसाईयों के हाथों गोवध का पापाचार होता रहा। अब तो देश में यांत्रिकी कत्ल खाने लगाकर मांस भक्षियों की क्षुधापूर्ति के लिये गौ मांस संसार भर में भेजा जा रहा है, इसके कारण भारत गोवंश से विहीन होने की स्थिति की ओर बढ़ रहा है।

यद्यपि गौ माता की रक्षा के लिये हमारे पूज्य संतों, एवं गौभक्तोंने निरंतर संघर्ष जारी रखा, परन्तु गौ भक्तों के एक संगठित और प्रचण्ड आंदोलन के बिना यह संभव नहीं। इसके लिये आवश्यक है कि हमारा समाज गाय के साथ हमारे भावनात्मक सम्बन्धों को समझे गोवंश और गोबर में लक्ष्मी का वास है इन तथ्यों को पहिचाने तो निश्चित ही एक जीर्ण शीर्ण लड़खड़ाते राष्ट्र की जगह हम एक समर्थ और शक्तिशाली भारत के निर्माण की ओर, जहां गोरस की सरितायें फिर बहें अग्रसर हो सकते हैं। समाज के लोक शिक्षण और लोक जागरण की दृष्टि से इस पुस्तिका में चित्रों व सरल भाषा के माध्यम से वैज्ञानिक तथ्यों से भी गोवंश का महत्व बताने का स्तुत्य प्रयास किया गया है।

अशोक सिंघल
अंतर्राष्ट्रीय महामंत्री, विश्व हिंदू परिषद

गौरक्षा के पावन यज्ञ में सभी पंथो के संत-महंत एक लंबे समय जे जुटे हुए हैं। अलकबीर विरोधी आंदोलन में भी पूज्य महंत नृत्यगोपाल दासजी महाराज, पू. पेजावर स्वामी विश्वेशतीर्थजी प्रणवानंदजी महाराज परमानंदजी, चिन्मयानंदजी महाराज आदि सैंकडो संतों ने प्रत्यक्ष भाग लिया। पंच खंड पीठाधीश्वर आचार्य श्री धर्मेन्द्र जी महाराज एवं दुर्गा रुप साध्वी ऋतंभरा जी ने तो अपने ओजस्वी भाषणों से जागरण भी किया और पशु रक्षकों का नेतृत्व भी किया। परन्तु इस आंदोलन में सबसे पहले जैन संतों व साध्वियों का प्रेरणा-प्रयास था। - प्रस्तुत है उनमें से कुछ के श्री वचन

"अहिंसा परमोधर्मः" को विश्व भर में गुंजायमान करने वाली 'श्री विश्व हिन्दू परिषद के द्वारा जो गो वंश रक्षा का अभियान चलाया जा रहा है, उस आन्दोलन के लिए मैं अन्तः करण से आशीर्वाद भेज रहा है। आज भारतीय संस्कृति को बचाने के लिये हम सभी को प्रण लेना होगा, मात्र गौ वंश रक्षा नहीं उससे भी बढ़कर सर्व प्राणि रक्षा तक हमें अभियान चलाना होगा। मांस निर्यात नीति को बन्द कराना होगा। बूचड़खानों पर रोक लगानी होगी। सरकारी स्थानों में मांसहार के बदले शुद्ध अन्नाहार चलाना होगा, पाठ्य शिक्षा के पुस्तकों में तथा प्रचार माध्यमों में हिंसाचार के अंश दूर कराने होंगे। आपके कार्य को सफलता मिले और देश भर में संत शाही को फिर से आये। पुनः अभिनन्दन के साथ जय अहिंसा। **-- आचार्य कला प्रभु सागरसूरीश्वर जी, महाराज बाड़मेर।**

राष्ट्र का सबसे बड़ा कलंक याने हैदराबाद के पास बना अलकबीर कत्लखाना उसे हटाना है। उसे मिटाना है। हैदराबाद कच्छी भवन में चातुर्मासार्थ विराजमान जैनाचार्य श्री. कला प्रभ सागरसूरीश्वर जीने अहिंसक समाज का आहवान चार महिने तक लगातार यांत्रिक कत्लखाना विरोधी वातावरण रहा और आचार्य श्री के अपने प्राण तक अर्पण करने के लिये उद्‌घोषणा सुनकर हिन्दुस्थान का अहिंसक समाज जाग उठा उपवास घोषणा सुनकर देश समर्पित हिन्दू संस्कृती रक्षा के लिए सदैव विश्व हिन्दू परिषद के महामंत्री श्री अशोक जी सिंहल श्री आचार्य श्री के पास पधारे और उपवास नहीं करने के लिये विनंती की और परिषद की ओर से आचार्य श्री को आश्वस्त किया उसके फलस्वरूप सिंहल जी के मार्ग दर्शन में एवं अ.भा.यांत्रिक कत्लखाना हटाओ समिति के राष्ट्रीय संयोजक श्री. हुकुम चन्द सावला के नेतृत्व में देश भर में कत्लखाना हटाने का जोरदार आंदोलन चला। आज आन्ध्रप्रदेश से अलकबीर कत्लखाना हटकर पं. बंगाल में लग रहा है, अहिंस प्रेमियों का कर्तव्य है कि उसे सफल होने न दें।"

-- बाल मुनि जी महाराज (आचार्य कला प्रभु सागर सूरीश्वर जी महाराज के वरिष्ठ शिष्य)

स्वस्थ गौ या गोवंश ही नहीं बिना दूध की गौएं और बूढ़े बैल जब तक गौ मूत्र एवं गोबर प्रदान करते है तब तक उनसे धरती की उपजाऊ शक्ति, वायुमण्डल की शुद्धि तथा मानव स्वास्थ्य में वृद्धि का जो काम होता है, वह किसी मशीन के द्वारा लाखों करोड़ो का खर्च करके भी संभव नहीं है। गौ-धन बचाने पर ही अपना देश ऋण मुक्त होकर अपनी ताकत के बल खड़ा रह सकेगा ऐसा विश्वास है। **– वाणी भूषण साध्वी प्रीतिसुधाजी (रायपुर)**

भारत में कत्लखाने अहिंसक संस्कृति का खुला अपमान है। उपाध्याय मुनि गुप्तिसागर जी दिल्ली

"मांस निर्यात भारत जैसे देश के लिये अशोभनीय है। हैदराबाद, बम्बई आदि स्थानों पर बड़े पैमाने पर पशु वध चल रहा है, जिसमें कानून के बावजूद भी काम में आनेवाले पशु अवैध रूप से कत्ल किये जाते हैं, पर इसे रोकने का मूल दायित्व सरकार पर है।

– अणुव्रत अनुशासन श्री तुलसी जी महाराज, नई दिल्ली

भारतीय संस्कृति के कलंक आधुनिक बूचडखानों का अहिंसक समाज को संगठित होकर विरोध करना चाहिये। **— दिग्मबर जैन मुनि आचार्य विद्यानंद जी महाराज - दिल्ली।**

विदेशी मुद्रारुपी जड धन की प्राप्ति के लिये देश के पशुधन रुपी चेतन धन का विनाश किया जा रहा है। पशुधन के विनाश से देश की कोई प्रगति कल्याणकारी नहीं हो सकती।

– दिगम्बर जैन आचार्य विद्यासागर जी महाराज कुण्डलपुर (म.प्र.)

॥ ऋषि और कृषि प्रधान भारत ॥

प्रकृति रूपा गाय और धर्म सदृश बैल ये दोनो ही भारत के दिव्य भव्य रूप की आधार शिला हैं। गौ धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष चारों की दाता है। इसी लिये गौमाता को "कामधेनु" भी कहा गया है।

पृथ्वी पर मूर्तिमन्त गौ परमशक्ति की प्रतीक स्वरुपा है। उसकी व्याख्या वेदों में भी साध्य नहीं है। गौ विश्व की माता है। यह पार्थिव जगत में जितना सत्य है। उससे भी अधिक इसका महत्व आध्यात्मिक दृष्टि से है। – योगिराज महर्षि अरविन्द

सर्वदेवमयी गौमाता

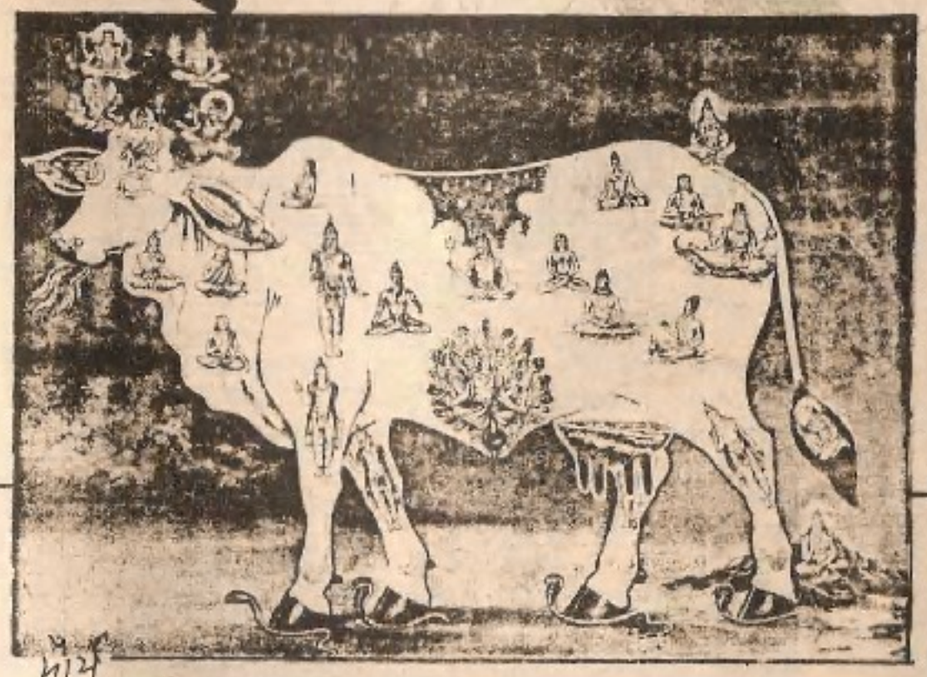

भारत की शास्त्रीय एवं लोक मान्यता है कि गाय के रोम-रोम में असंख्य देवताओं का वास है। अतः गौ सेवा-पूजा से अनेक देवताओं की पूजा का फल या कष्ट देने पर पाप मिलता है!

सर्वे देवाः स्थिता देहे
सर्व देवमयी हि गौः।
(बृहत्पाराशर स्मृति ३/३३)

गौमय भारत

"गौ" शब्द भारत में पवित्रता, महानता श्रद्धा और संस्कृति का प्रतीक है। इसीलिये भारत के अनेक पावन संबोधन गौ से ही प्रारंभ होते हैं।

यदि तुमने पशु, वृक्ष, नदी पर्वत आदि का मंगल नही किया, तो मानवो! तुम्हारा मंगल भगवान भी नही कर सकते - **आचार्य श्री धर्मेन्द्र जी महाराज**

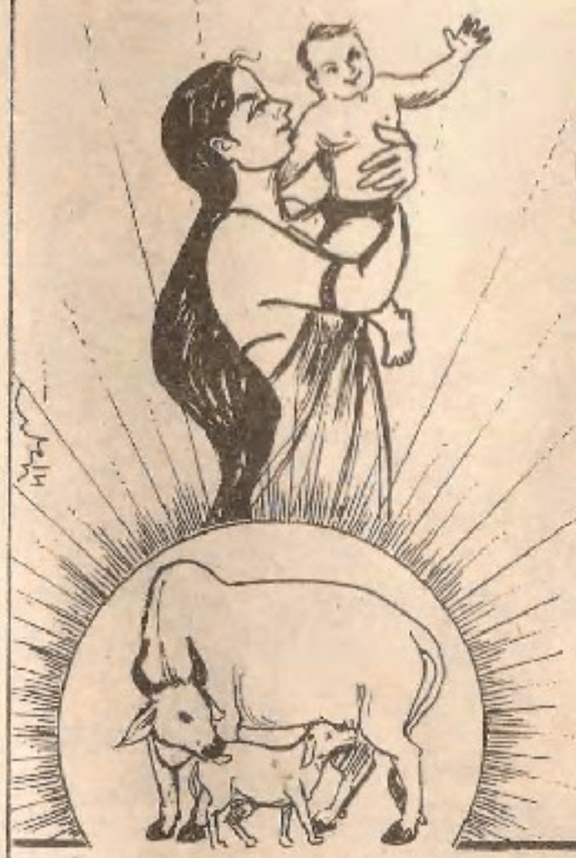

संसार के समस्त जीवों में सिर्फ गाय ही ऐसी प्राणी है जिसका बच्चा पैदा होते ही "माँ" शब्द का उच्चारण करता है। सारे संसार को

माँ की ममतामयी गरिमा एवं लौकिक-पारलौकिक हर दृष्टि से परम लाभकारी होने के कारण ही गाय को पशु नहीं वरन घर परिवार के सम्मानित सदस्य के रूप में प्रतिष्ठा दी जाती है।

मातर सर्व भूताना गाव: सर्व सुखप्रदा:।
महाभारत अनुशासनपर्व ७५-२९

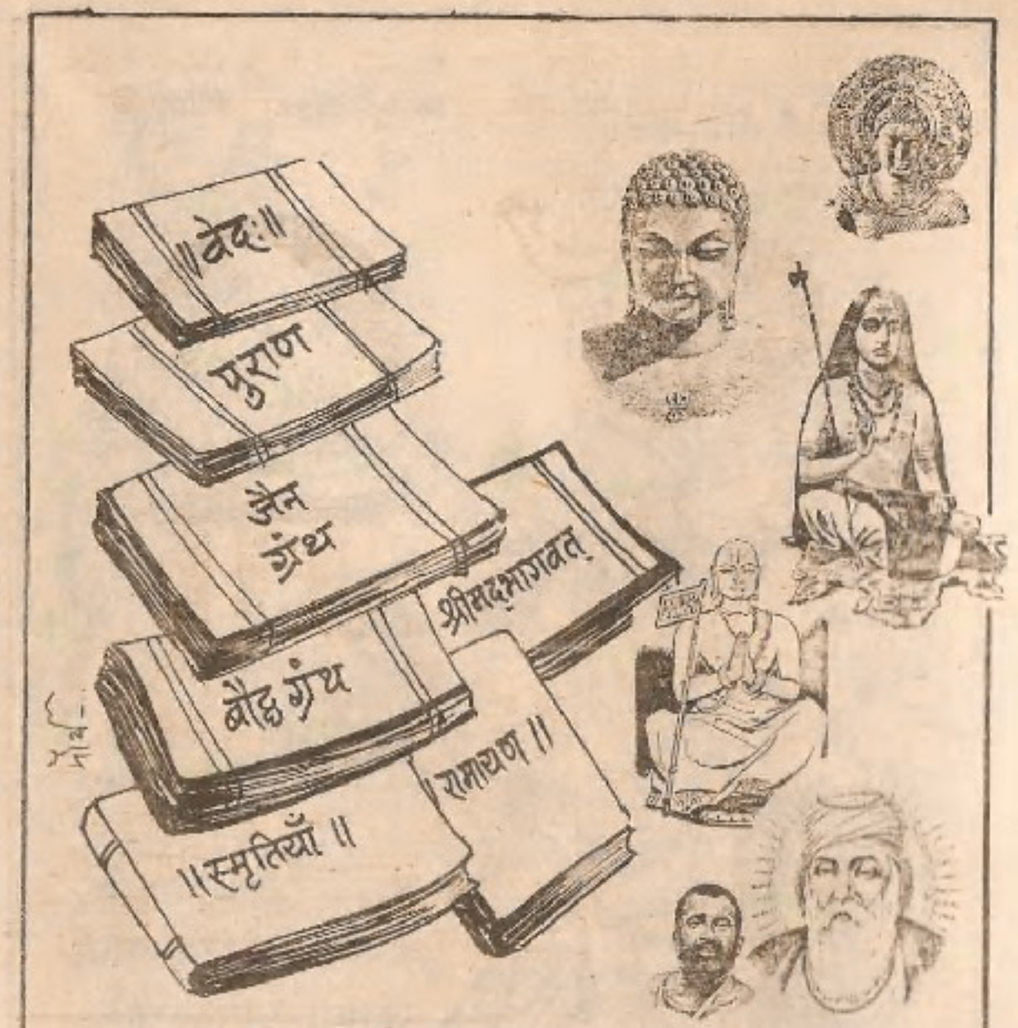

सभी पंथों के धर्मग्रंथ गौ महिमा के आख्यानों से भरे हुऐ हैं। हिन्दू ग्रंथ ही नहीं मुस्लिम और ईसाई ग्रंथों में भी "गौमहिमा" पर भली-भाँति प्रकाश डाला गया है। गोरक्षा का आदेश दिया है।

त्वं माता सर्व देवानां त्वं च यज्ञस्य कारणं।
त्वं तीर्थं सर्वतीर्थानां नमस्तेस्तु सदानघे॥
हे निष्पाप गौ! तुम सभी देवताओं की माता हो। यज्ञ की आधारभूता हो। तीर्थरुपा हो तुम्हें बारम्बार नमस्कार है।

संतों की वाणी
गौ कल्याणी

भारत के भिन्न-भिन्न पंथों व संतों में ईश्वर विषयक विचारों में मतभिन्नता अवश्य रही, परन्तु... सभी ने एक स्वर से गाय की महिमा गाई। उसे पूज्य और अवध्य बताया!

> यदी देह आज्ञा तुर्क गाहे खपाऊँ। गो घात का दुख जगत से हटाऊँ।
> आसपूर्ण करो तुम हमारी। मिटे कष्ट गौअन छूटे खेद भारी।
> -गुरु गोविन्द सिंह

विप्र धेनु सुर संत हित............ लीन्ह मनुज अवतार।

राक्षसी आतंक व अत्याचार से त्रस्त गौ माता की करुण-कातर पुकार से द्रवित होकर परमपिता स्वयं अवतार लेकर पृथ्वी को भार मुक्त करते हैं। .... गौ हत्यारे राक्षस हैं ...प्रभु द्वारा उनका सर्वनाश निश्चित है।"

— ब्रह्मलीन ब्रह्मर्षि देवरहा बाबा

"देश का नौजवान गौमाता की पुकार सुनकर सड़कों पर उतर आयेगा और देश की धरती से गोहत्या का कलंक अपने रक्त से धो देगा"... (बाबा की घोषणा सत्य होती जा रही है)

> सात्विक श्रद्धा धेनु सुहाई। जौं हरिकृपा हृदय बस आई
> संत गो तनुधारी भूमि बिचारी परम बिमल भई सोका।
> - संत तुलसीदास

राम राज्य की नींव गौसेवा

आदर्श रामराज्य की परिकल्पना को साकार करने के लिये महर्षि वशिष्ठ ने राजा दिलीप को गोसेवा का निर्देश दिया। 'नन्दिनी' गाय की सेवा एवं रक्षा के लिये अपने जीवन को दाँव पर लगाने का आदर्श उपस्थित करके राजा दिलीप ने अपने कुल में "रामावतार" का सौभाग्य पाया.

महाराजा दिलीप की भाँति ही महाराजा ऋतंभर की गोसेवा की कथा भी शास्त्रों में वर्णित है। सत्यकाम जाबाल को गोसेवा से ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति, महर्षि च्यवन द्वारा अतुल सम्पदा, राज्य आदि ठुकराकर अपने मूल्य के रूप में एक गाय स्वीकारना आदि उदाहरणों से जहाँ गोसेवा की प्राचीन परिपाटी का ज्ञान होता है वहीं यह भी सिद्ध होता है कि लौकिक, पारलौकिक हर दृष्टि से गोसेवा अमोघ फलदायी है।

सच्ची गौ सेवा स्वर्ग या गोलोक को पृथ्वी पर प्रत्यक्ष उतार लायेगी।

गोपाल ..... गोघातकों के लिये काल !

भगवान श्री कृष्ण ने कंस द्वारा संचालित अनेक गोघाती कत्लखानों को ध्वस्त किया। कालिया, बकासुर, अघासुर आदि के वध की कथाओं में उसी का रोचक वर्णन है।

गोरक्षा के लिये शस्त्र उठाना श्री कृष्ण की भक्ति ही है.

जेहि-जेहि देस धेनु द्विज पावहिं।
नगर गाउँ पुर आग लगावहिं।।
(राम चरित मानस १-१८३-६)

गाय भारत का सांस्कृतिक ... मानबिन्दु •

....इसीलिये क्रूर, बर्बर विदेशी आक्रान्ताओं ने मंदिरों को तोड़ने, हिन्दुओं के भीषण कत्लेआम के साथ ही साथ गौवंश का भी बड़े पैमाने पर नृशंसता से संहार किया। ईद के दिन गोहत्या उसी मानसिकता का रूप है।

जो पसु हौं तो कहा बसु मेरो, चरौं नित नंद की धेनु मझारन।
यदि पशु के रूप में मेरा जन्म हो तो मै नंद की गायों के बीच चरूं। -रसखान (प्रसिद्ध मुस्लिम संत)

गौहत्यारा वधयोग्य

मेरे जीते जी यह गाय नहीं कट सकती – डा हेडगेवार (पुसद में)

हिन्दू राज्य के संस्थापक वीर शिवाजी ने बचपन में गौ हत्यारे कसाई का हाथ काट दिया था। (बीजापुर की घटना)
पुसद में शांति के आधार पर डा. हेडगेवारने कसाई के हाथों से गाय की रक्षा की।

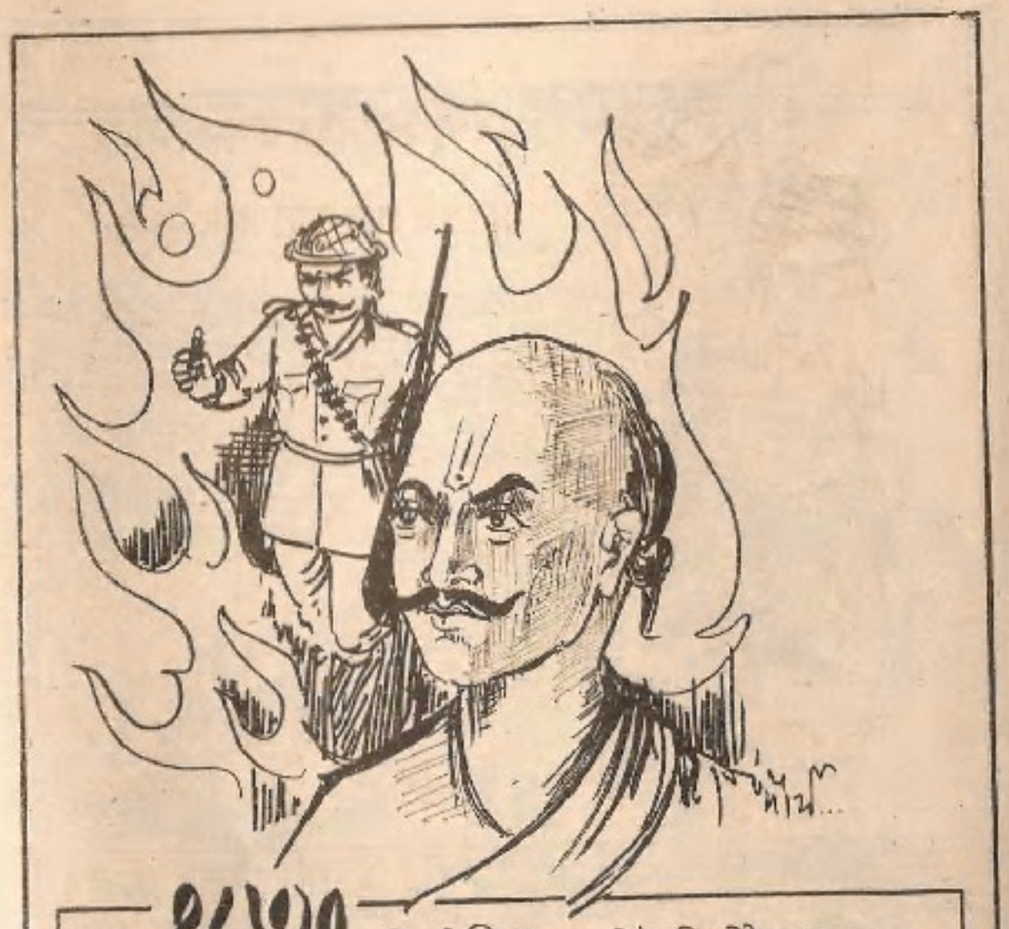

१८५७ की क्रांति के मूल में भी गौहत्या का विरोध ही था। कारतूस में गाय की चर्बी लगाने के विरोध में क्रांतिकारी शहीद मंगल पाण्डे ने सशस्त्र विद्रोह करके गौहत्यारे अंग्रेजों को मौत के घाट उतार कर स्वतंत्रता संग्राम का बिगुल बजा दिया था।

आज पुनः देश पर गौर अंग्रेजों से अधिक घातक काले अंग्रेजो का शासन है। जो गौ हत्या की दलालत कर रहे है, गौ हत्यारो को संरक्षण दे रहे है। देश की सांस्कृतिक स्वतंत्रता के लिये इन्हे उखाड़ फेकना ही राष्ट्रधर्म है - बाबा

देश के सामाजिक एवं राजनैतिक उद्धार में लगे सभी महामानवों ने एक स्वर से गौहत्या बंदी और गौ संवर्धन पर बल दिया था.

स्वतंत्रता संग्राम में लगे नेताओं की स्पष्ट घोषणा थी कि... स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद में सम्पूर्ण देश में पूरी तरह से

गौहत्या बंद कर दी जायेगी !

सम्पूर्ण गौवंश की हत्या पर कानून द्वारा प्रतिबंध लगे बिना गौ संवर्धन की बात करना केवल धोखाधड़ी ही है। - ब्रह्मलीन पूज्य स्वामी करपात्री जी महाराज

गांधीवाद की हत्यारी

कांग्रेसी सरकारें

◉ गौवध मनुष्य वध के समान। गौहत्या बन्दी मेरे लिये स्वराज्य से भी अधिक महत्वपूर्ण प्रश्न है। ◉ विश्व के लिये हिन्दू धर्म की देन है - गौरक्षा। और गौ रक्षा के द्वारा ही हिन्दुओं के हिन्दुत्व का अस्तित्व आगे भी रहेगा। ◉ मेरे लिये गाय में सम्पूर्ण जगत समाहित है।

आजाद भारत की सत्ता एक गौविरोधी व्यक्ति के हाथों में सौंपने की एक भारी भूल ने बापू के सारे अरमानों पर पानी फेर दिया। हिन्दी की घोर उपेक्षा, स्वदेशी अर्थतंत्र का नाश और चल रही गौहत्या उसी भूल का परिणाम हैं!

नाकृत्वा प्राणिनां हिंसा मांसमुत्पद्यते क्वचित्।
न च प्राणिवधः स्वर्ग्यस्तस्मान्मांस विवर्जयेत्॥
(मनुस्मृति ५-४९)

परकीय आक्रान्ता मुगल शासकों ने भौतिक रूप से हमारा नुकसान अवश्य किया। परन्तु अंग्रेजी मानसिकता के गुलाम हमारे अपने ही शासकों ने तो भारतीय संस्कृति-सभ्यता को जड़ से ही खोद डालने का क्रूर कुकृत्य प्रारंभ किया, जो आज भी जारी है।

कारतूस में गाय की जरा सी चर्बी लगाने पर जिन भारतीयों ने गोरे अंग्रेजों शासन को उखाड़ फेंका वर्तमान में चर्बी युक्त घी और **गोमाँस से बने पेप्सी खाद्य** प्रेम से खा रहे हैं।

जनसत्ता (पेप्सी सॉस में गोमांस) दैनिक भास्कर (चिकलेट में गोमांस) ७ जुलाई ९८

कुछ काल के पश्चात् जब पशु नहीं बचेंगे तब ये मांसाहारी, मनुष्यों को भी नहीं छोड़ेंगे। गाय की रक्षा करो सब की रक्षा होगी। — स्वामी दयानन्द सरस्वती

◉ त्यागपत्र दे दूंगा पर गौहत्या बंदी के आगे नहीं झुकूँगा।
◉ राज्य सरकारें ना गौवध निषेध कानून बनायें.. ना पास होने दें।
◉ भोजन में गौमाँस का प्रयोग बढ़ाया जाये। दवाइयाँ भी बनाये।
◉ दिल्ली और मुंबई में बड़े-बड़े कत्लखाने खोले जायें।

जय महात्मा गाँधी !

तब से लेकर आज तक गाँधी जी के इन्हीं बगुला भगतों (कांग्रेस) की छत्र-छाया में गौमाता के रक्त माँस का राष्ट्रघाती व्यापार वैध एवं अवैध रूप से लगातार जारी है।

संदर्भ - गौमाता का विनाश - सर्वनाश - श्री रामशंकर अग्निहोत्री (लेखक)

हमारी जिस पवित्र भावना को औरंगजेब, महमूद गजनवी, तैमूरलंग नहीं खत्म कर सके उसी परम पावन भावना को, श्रद्धा को हिन्दुओं में ही उत्पन्न होने वाले कुछ नेताओं ने अपने ही हाथों समाप्त कर डाला - ब्रह्मलीन जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी कृष्णबोधाश्रम जी महाराज

गोवँश के रक्त-मांस का व्यापार। गोभक्ति तंत्र की जगह।
कटती गौ की करुण पुकार। वाह री सेक्यूलर सरकार.

* इस्लाम में गाय की कुर्बानी देने का कोई प्रावधान नहीं है। न्यायालय ने भी निर्देश दिया है। फिर भी हिन्दुओं को को चिढ़ाने के लिये......

हिन्दुस्थानी सभ्यता का नाम ही गोसेवा है। लेकिन आज हिन्दुस्थान में गाय की हालत उन देशों से खराब है जिन्होंने कभी गोसेवा का नाम नहीं लिया था। - आचार्य विनोबा भावे

आजादी के पूर्व देश में 300 कत्लखाने थे।

मांस निर्यात बिल्कुल नहीं।

आजाद भारत में कत्लखानों की संख्या 36,031 है।*

मांस निर्यात बड़े पैमाने पर।

(दि टाइम्स ऑफ इन्डिया नई दिल्ली ५ अप्रैल १९९४)

प्रतिदिन

पशु निर्ममता पूर्वक कत्ल किये जाते हैं।

इस भारी संख्या में संसदीय आकड़ों के अनुसार प्रतिदिन 29,500 गौवंश का वध शामिल है। इस वैध कत्ल के अतिरिक्त हजारों की संख्या में गोवंश हत्या और तस्करी का सिलसिला जारी है।

* संदर्भ- मेट्रोपोलिस मुंबई 23-24 सितंबर 1993 एवं कत्लखाने के 100 तथ्य से.
* विभियोग परिवार मुंबई के अनुसार पंजीकृत यांत्रिक व सामान्य कत्लखाने 3651 ।

"भारत में गोपालन सनातन धर्म है।"
-भारत के प्रथम राष्ट्रपति, डा. राजेन्द्र प्रसाद

"मुझे चाहे मार डालो पर गाय पर हाथ न उठाओ"
-लोकमान्य तिलक

"हिंसा और क्रूरता पर आधारित अर्थतंत्र के लिये मेरी राजनीति में कोई स्थान नहीं है" कहने वाले महात्मा गांधी के देश में आज सरकार जीव-हत्या को उत्पादन और खेती का नाम देकर विदेशी मुद्रा कमाने के मोह में पड़ी हुई है।

* हालैंड से एक करोड़ टन रासायनिक खाद्य पर पले सुअरों का मैला आयात

विदेशियों को गौमांस देना जरुरी है कहकर देश में गोवध को आवश्यक बताने वाले मनुष्यता को कलंकित कर रहे हैं।
- राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन (कलकत्ता में)

खूनी व्यापार

ने जगद्‌गुरु भारत
को क्रूर कसाई बना दिया.

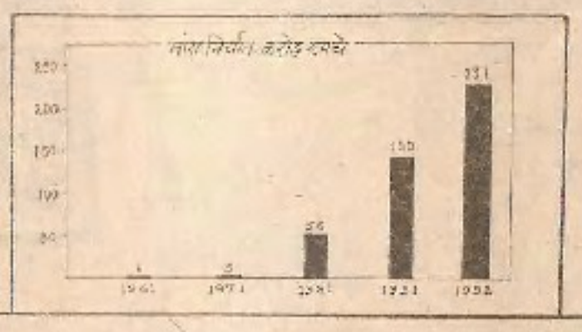

मध्य पूर्व के देशों को भेजे जाने वाले माँस में ७० प्रतिशत
माँस भारतीय पशुओं का होता है। सबसे बड़ा कसाई देश

संदर्भ - इकोनामिक सर्वे 1992-93 पेज S.91 द्वारा "एन अलार्म काल"

मांस, मांस हेतु पशु तथा मांस उत्पाद का निर्यात भारत सरकार को प्रतिबन्धित कर देना चाहिये।

"[illegible] पशु कल्याण संस्थान की कार्यकारिणी की बैठक, हैदराबाद दि. ३१ मार्च '९४ में प्रस्तावित"

निर्जीव सामान की भांति पशुओं को ट्रक में एक के ऊपर एक ठूँस-ठूँस कर कत्लखाने के बाड़े तक लाया जाता है। यहाँ लाकर उन्हें सात-आठ दिन भूखा रखा जाता है।

भूख प्यास की मर्मान्तक पीड़ा से आंसू बहता निरीह बैल
देवनार कत्लखाने का चित्र साभार - न.भा.टा. दिल्ली.

यद्गृहे दुःखिता गावः स याति नरकं नरः।
जहाँ गाय दुःखी है वह जगह नरक है॥

सँविधान में निरुपयोगी गौवंश को काटने की छूट है। इसी का सहारा लेने केलिये स्वस्थ बैल आदि पशुओं को क्रूरतम हथकंडों द्वारा अपंग बनाकर खुले आम काट दिया जाता है.

कत्लखानों में पशुओं के स्वास्थ्य निरीक्षण के लिये एक शासकीय पशु चिकित्सक नियुक्त रहता जो जांच करके उसके निरुपयोगी होने का प्रमाण पत्र देता है। आमतौर पर उसे थोड़ी सी रकम देकर पटा लिया जाता है। यदि डॉक्टर ऐसा करने से मना करता है तो उसे मारा पीटा भी जाता है। ईदगाह* कत्लखाने में डॉक्टर पर प्राणघातक हमला इसीका उदाहरण है।

संदर्भ - ईदगाह प्रकरण के समय समाचार पत्रों की खबर के अनुसार

कत्लखाने बदल देते हैं दूध की धार को खून के घिनौने धब्बों में। आपको मांस की जरूरत बिल्कुल नहीं है क्योंकि यह आपकी तन्दुरुस्ती, आपकी पशु सम्पदा, और आपके राष्ट्रीय अर्थ तंत्र के लिये अभिशाप है. जब हम खुद मूक प्राणियों की जीती-जागती कब्रें हैं तब फिर इस दुनिया में किन्हीं आदर्श स्थितियों की कल्पना हम कैसे कर सकते हैं - **बार्ज अल्बर्ट आइन्सटीन**

भूख से व्याकुल मृतप्राय पड़े पशुओं को घसीट यंत्र के पास लाकर पीट-पीटकर खड़ा किया जाता है एवं उसका एक पैर पुली से जकड़ा जाता है।

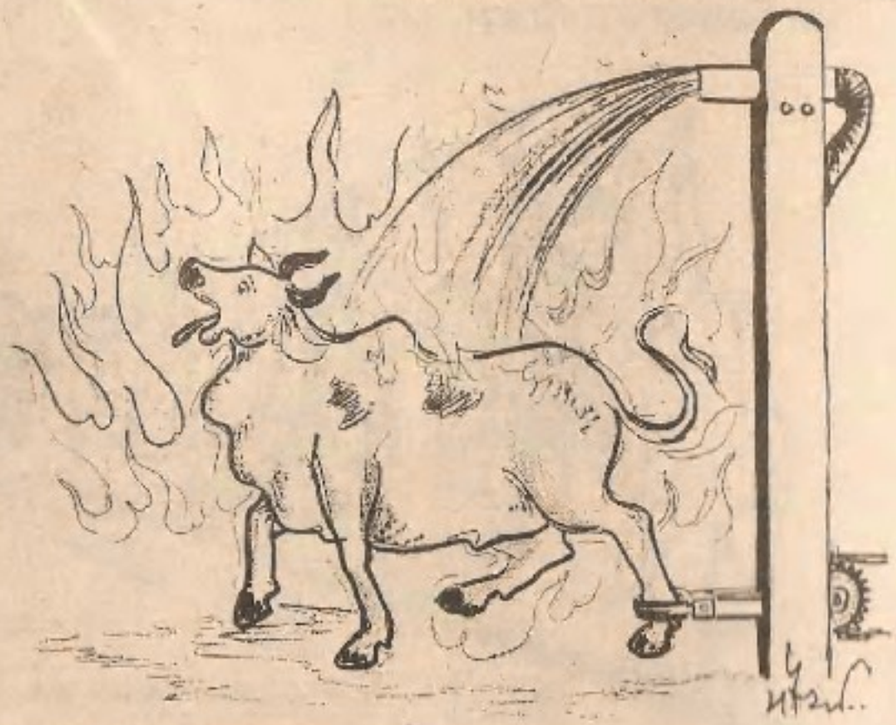

इसके बाद में उस पर उबलता हुआ पानी छोड़ा जाता है ताकि खून का पूरे शरीर में तेजी से संचार हो एवं पशु का चर्म भी नर्म हो जाये।

भारतीय चमड़ा अनुसंधान के अनुसार १९८७ में १ करोड़ ४० लाख गौवध

जिस देश में प्रमुदित गाय के रंभाने के स्वर सुनाई देते थे। आज उसी देश में गौ एवं अन्य पशुओं का दारुण क्रंदन गूंज रहा है। यह घोर पतन रोकना ही होगा। - **श्री. के.एल.गोधा.उदयपुर.**

....इसके बाद पुली ऊपर उठने लगती है और पशु एक पैर पर लटका दिया जाता है। कसाई उल्टे लटके पशु की गलनस (जेगुलर-वीन) काट देता है ताकि पशु मरे नहीं.. और उसका खून रिस-रिस कर निकल आये।

अलकबीर - देवनार - टेंगरा
जैसे कत्लखानों में प्रतिदिन हजारों लीटर खून इकठ्ठा होता है।

यह खून सुविधा होने पर दवाई-टॉनिक आदि में काम लिया जाता है। या बहा दिया जाता है। भूजल को प्रदूषित करने वाला यह खून कई बार फूटी पाइपलाइनों द्वारा नलों में आजाता है। दिल्ली में ऐसा हुआ भी

* समाचार पत्र * कत्लखानों के पास के निवासियों की सत्य शिकायत

वोट हेतु गौ हत्यारों के हित में कानून बनाने वाली।
है पापी सरकार गाय का खून बहाने वाली।
- मवा

पशु की जान निकलने के पूर्व ही उसके पेट में छेद करके हवा भरी जाती है... और चमड़ा उधेड़ लिया जाता है!

इस घोर पाप के जिम्मेदार मांस व चमड़ा निर्यात करने वाली सरकार के साथ ही वे लोग भी हैं जो चमड़े का उपयोग बड़ी मात्रा में कर रहे हैं। नर्म चमड़े के शौकीन हैं।

स्वयं संसदीय समिति ने (१९९३) अपनी सिफारिश (पैरा २.२१) में इस पर आपत्ति की है।

निर्बल को ना सताइये जाकी मोटी हाय।
मरे जीव की खाल से लोह भस्म हो जाय।
- संत कबीर दास

कॉफ लेदर (नर्मचमड़ा) मुलायम मांस और रेनेट चीज (बछड़े की आंत का पावडर) के लिये पैदा होने से पूर्व ही लाखों बछड़े मार दिये जाते हैं।

संदर्भ इकोनामिक सर्वे 1992-93 पेज क्र. S-31

यदि गौ और गौवंश नष्ट होता है तो देश को नष्ट होने से कोई बचा नहीं सकता!

महर्षि दयानंद

अब्बा, काटना ही है, तो जल्दी काट दो ना. बेचारी दर्द से कैसी तड़प रही है! मुझे दया.....

कमबख्त काफिरों जैसी बातें करता है। अगर बिना तड़पाये मार दूंगा तो इसका मांस इस्लाम के अनुसार हलाल नहीं रहेगा. हराम हो जायेगा!

गोहत्या देश का एक धार्मिक प्रश्न है तो गौवंश हत्या भी उतना ही धार्मिक एवं आर्थिक प्रश्न है। इसके अलावा यह भी विवादित किन्तु मानवीय प्रश्न है कि पशु को "कत्ल" के नाम पर मर्मान्तिक पीड़ा देते हुऐ तड़पा-तड़पा कर क्यों मारा जाता है। धर्म के नाम पर इक्का-दुक्का बलि पर तूफान उठाने वाले कथित समाज सुधारक मुसलमानों द्वारा कत्ल पर....?

जहर उगलने वाले सापों को दूध पिलाते है हम।
दूध देने वाली माय को उधेड़कर खा जाते हो तुम।
गौ हत्यारों से कैसा बन्धुत्व? -आचार्य श्री धर्मेन्द्र जी महाराज

कसाई के इस क्रूर कृत्य को "कृषि" का नाम देकर सरकार यज्ञ रूपी 'कृषि' और ऋषि रूपी 'कृषक' को भी अपमानित कर रही है!

मांस प्राप्ति के संसाधनों को सरकार ने कृषि सूची Agriculture index में रखा है। कत्ल के इस कुकर्म को सांपों की खेती, खरगोश की खेती, चूजों की खेती, सुअरों की खेती, मछलियों की खेती, अंडो की खेती आदि का नाम दिया गया है। क्या ये खेत में उगते हैं? पेड़ों पर फलते हैं? अंडे को शाकाहारी कहकर प्रचारित करना इसी नीति का अंग है।

सिंगापुर एशियन मॉस कम्युनिकेशन रिसर्च इंफर्मेशन सेन्टर के अनुसार भारत की 75% हिंसा का उत्तरदायी दूरदर्शन है। विज्ञापन तथा मांस पकाने की विधियाँ हिंसा की मनोवृत्ति भड़का रही है।

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्चित जगत्याम् जगत।
तेनत्यक्तेन भुंजीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्। ईशावास्योपनिषद
ईश्वर जगत में सर्वत्र व्याप्त है। अपने सुख के लिये दूसरों के अधिकारों का अतिक्रमण मत करो

----या तो राष्ट्रीय चिन्ह बदल दो.
या यांत्रिक कत्लखानों और मांस निर्यात को रोको.

भारत का राष्ट्रीय चिन्ह तीन मुंह वाली सिंह मूर्ति है जिसके नीचे एक ओर घोड़ा और दूसरी ओर बैल अंकित है। तिरंगे ध्वज के बीच का चिन्ह "अशोक चक्र" भी अहिंसा का प्रतीक है। कोई इनका अपमान करे तो उसे दंडित किया जाता है।

परन्तु स्वयं भारत की सरकार ही अपनी क्रूर नीति से इनका अपमान करके राष्ट्र घात कर रही है.

सरकार की गोहत्या नीति का कड़ा विरोध करना चाहिये और वोट उनको ही देना चाहिये जो देश में पूर्ण रूप से गो हत्या बंद करने का वचन दें। -श्रद्धेय स्वामी श्री रामसुखदास जी महाराज

सरकार ने देश में बड़े - बड़े यांत्रिक कत्लखानों को हरी झंडी दिखा दी है!

मांस निर्यातक कत्लखाने स्थापित और प्रस्तावित दिल्ली ईदगाह ओखला मुम्बई देवनार, कलकत्ता टेंगरा, गार्डनरीच, मोरी ग्राम, दुर्गापुर, अलकबीर, आंध्रप्रदेश हैदराबाद, अलकबीर, अल्लाना, नागोचिरला मेदार्थोर, आनन्दपुरम, मद्रास, पेराम्बूर, [illegible], कोइम्बतूर, पंजाब, [illegible] हिमाचलप्रदेश, शिमला, महाराष्ट्र अहमदनगर ([illegible]) एक खुलने वाला है, थाणा, मध्य प्रदेश ग्वालियर, [illegible], रामपुर, भोपाल, असम (२), केरल (३), उ.प्र. (६) जम्मू-कश्मीर (२), बिहार (४)

गौवंश का कत्ल देश के अर्थतंत्र का कत्ल है।

भारत में गाय अपनी उपयोगिताओं के कारण आर्थिक इकाई के रूप में जानी जाती रही है। इसीलिये किसी भी व्यक्ति की समृद्धि उसके सोने-चाँदी, भवन, जमीन आदि के बजाय उसके पास उपलब्ध गोवंश की संख्या से आँकी जाती थी। गौवंश को गोधन कहा जाता है। ऐसा चेतन धन जो लगातार गुणात्मक रूप से बढ़ता जाता है।

थोड़ी सी विदेशी मुद्रा के लोभ में इसे नष्ट करने का फल हुआ कि "सोने की चिड़िया" कहलाने वाला समृद्ध भारत आजकल विश्व के सर्वाधिक कर्जदार देशों में प्रमुख स्थान पर है। जैसे जैसे गोवंश कटता गया भारत की गरीबी, मँहगाई और कर्ज बढ़ता गया.

गोभिस्तुल्यं न पश्यामि धनं किञ्चिदहाच्युत।

महाभारत अनुशासन पर्व ५१-२६

हे अच्युत मैं इस संसार में गो धन के सदृश और कोई धन नहीं देखता हूं।

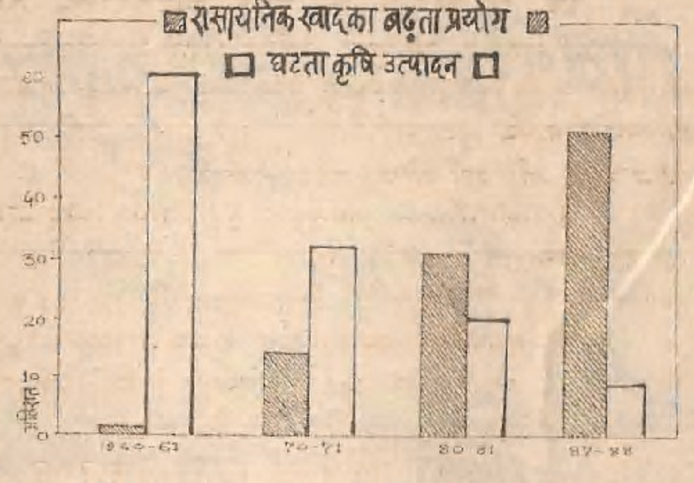

रासायनिक खाद नशीली दवा के समान है। जिसके प्रयोग से प्रारंभ में तो अप्रत्याशित लाभ होता है। परन्तु धीरे-धीरे यूरिया की मात्रा बढ़ती जाती है और उत्पादन लगातार घटता जाता है। अंत में रह जाती है बंजर-ऊसर भूमि! अकाल की छाया!!

अपने अनाज और रासायनिक खाद का बाजार बनाने के लिये भारत में कत्लखानों की बाढ़ एवं मांस भक्षण की घृणित परम्परा को बढ़ाया जा रहा है। विदेशों की इस क्रूर चाल में फंसकर हम स्वयं अपने जैविक खाद के भंडार पशुओं को काटे जा रहे हैं।

संदर्भ-(इंडिया 1990)

"मेरे विचार से भारत की वर्तमान परिस्थिति में गोहत्या निषेध से बढ़कर कोई वैज्ञानिक तथा विवेकपूर्ण कृत्य नहीं है" -जयप्रकाश नारायण
गोमये वसते लक्ष्मी॥ गोमय अर्थात् गोबर में लक्ष्मी जी वास करती है।

॥ ऊर्जा एवं खाद ॥

सरकार एनरान-निप्पान जैसी विदेशी कम्पनियों को बिजली बनाने के लिये बुला रही है। रासायनिक खाद के आयात और सबसिडी में अरबों-खरबों रूपये लुटा रही है परन्तु इन सबके देसी स्त्रोत पशु और पशु उत्पाद की पूर्ण उपेक्षा की जा रही है।

केलीफोर्निया में 90 हजार बूढ़ी-अपंग और बाँझ गायों के गोबर से चलने वाली पावर जनरेटिंग इकाई स्थापित की गई है। इस परियोजना 15 मेगावाट विद्युत के अतिरिक्त 160 टन राख खाद एवं 600 गैलन गोमूत्र कीटनाशक के रूप में प्राप्त हो रहा है। 45 मिलियन डालर से स्थापित इस परियोजना से प्रतिवर्ष 2 मिलियन के खर्च पर 10 मिलियन डालर की प्राप्ति हो रही है।

भारत में भी "नेडप" पद्धति के अनुसार एक गोवंश के वार्षिक गोबर से बनाई गई खाद का मूल्य 30 हजार रूपये से भी अधिक होता है। एवं गुणवत्ता भी कहीं अधिक होती है। बायोगैस संयत्रों द्वारा गांवों की विद्युत आपूर्ति गांवो से ही हो सकती है।

संदर्भ गाय का चिरकालिक सच्चा अर्थशास्त्र - वर्धा पेज नं. 38

लक्ष्मीश्च गोमये नित्यं पवित्रा सर्व मंगला
(स्कंद अ. रेवा ८३/१०८)
गोबर में परम पवित्र सर्वमंगलमयी श्री लक्ष्मी जी का नित्य निवास है।

परिचमी देशों की कूटनीति और कांग्रेसी नेताओं के स्वार्थ ने भारत की

...परम्परागत कृषि को भारी लागत वाला उद्योग बना दिया.

भारतीय कृषि बिना पूंजी वाला ऐसा धंधा था जो यज्ञ के समान पावन माना जाता था। कृषक को अन्नदाता का संबोधन दिया जाता था। थोड़े बहुत लगान आदि के अतिरिक्त सारी लागत पूंजी सिर्फ मानवीय श्रम ही था। खाद गौवंश आदि पशुओं से गोबर के रूप में, मूत्र कीटनाशक के रूप में एवं शक्ति सिंचाई - हल चालन आदि रूप में मुफ्त मिल जाती थी. कृषि-उत्पाद की ढुलाई एवं परिवहन भी बैलगाड़ियों से बिना खर्च होता था।

अंग्रेजों ने भारत में आने के बाद इसका अध्ययन किया... और अपने रासायनिक खाद और कीटनाशकों की खपत हो सके, इस लिये भारतीय कृषि की मूलाधार गाय को गौमाता के स्थान से हटाकर एक उपयोगी पशु घोषित किया...प्रचारित किया, ताकि हमारी धार्मिक आस्था खत्म हो जावे। परन्तु अंग्रेजों के जाने के बाद अंग्रेजी संस्कारों में डूबे हमारे शासकों ने गाय को उपयोगी मानने से इंकार कर दिया। और निरुपयोगी कहकर गौवंश की हत्या करने के लिये बड़े - बड़े यांत्रिक कत्लखाने खोल लिये। नेहरु से राव तक यही अंग्रेजी पन धाया रहा।

इसकारण किसानों को मिलने वाली मुफ्त की खाद -दवा व शक्ति समाप्त हो गई. और मंहगे यूरिया, कीटनाशकों व डीजल ने मंहगाई तो बढ़ाई ही साथ में भारतीय कृषि को विदेशी संसाधनों की दया पर चलने वाला मंहगा उद्योग बना दिया.

राष्ट्रघाती जहर

गोवध कारण बढ़ रहा क्लेश दिन दिन है। गोवध कारण गिर रहा देश दिनदिन है।
हम दीनहीन बलक्षीण हुए जाते है। गोवध कारण घट रहा शेष दिन दिन है।
-महावीर प्रसाद मधुप

"यांत्रिक कत्लखाने"

भारत के प्राकृतिक खाद भंडार

को नष्ट करने का सोचा-समझा विदेशी षडयंत्र है.

WHEN DEATH BECKONS: Animals lined up for the chopping block at the [illegible] Bombay - Express file photo

विदेशी रासायनिक खाद लॉबी द्वारा इसीलिये [illegible] रूप से बड़े पैमाने पर कत्लखानों को प्रोत्साहन दिया जा रहा है। अमरीकन बैल आयोग ने भारत की 80% गायों के कत्ल का सुझाव दिया है।

[illegible] चिकित्सै [illegible] वसिष्ठ॥ [illegible]
गाय,दूध, घी का एकमात्र स्रोत है, जो अमृत तुल्य है। गाय मानवता को [illegible]
है। अवश्य गाय का वध न करो।

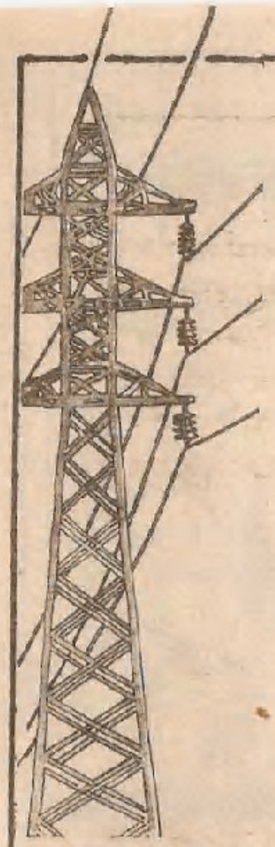

गौवंश एवं अन्य पशुओं से देश को लगभग ४0,000 मेगावाट ऊर्जा भिन्न-भिन्न प्रकार से प्राप्त होती है। इसका वार्षिक मूल्य लगभग २७ हजार करोड़ रुपये है।

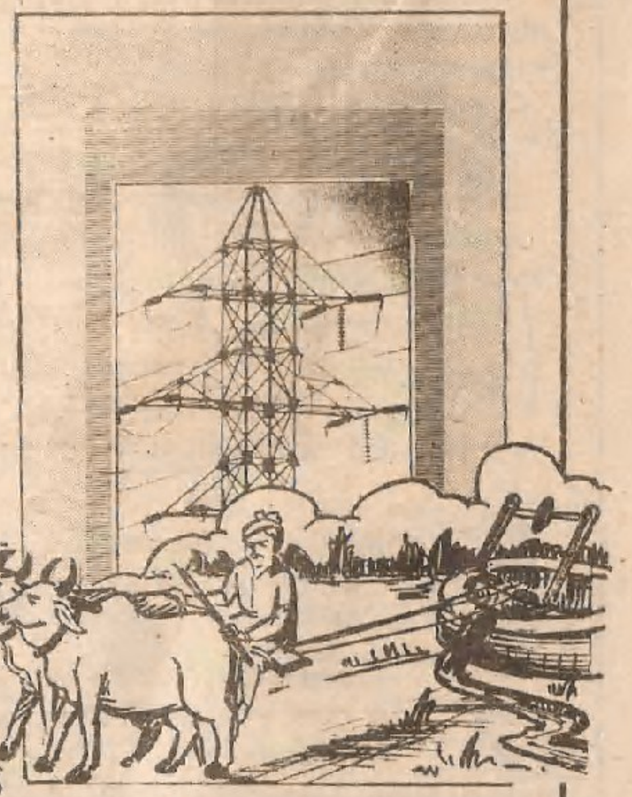

भारत के सभी बिजलीघरों की विद्युत उत्पादन क्षमता २२ हजार मेगावाट हैं। कृषि कार्य के लिये विद्युत का प्रयोग करें तो इसहेतु २५४0 अरब डालर का पूंजी निवेश करना होगा। जो भारत के लिये कठिन ही नहीं सर्वथा असंभव है!

अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा सम्मेलन में श्रीमती इंदिरा गॉधी का वक्तव्य (नैरोबी)

गोवंश के उपकार की सब ओर आज पुकार है
तो भी यहाँ उसका निरंतर हो रहा संहार है।

- राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त

ट्रेक्टर या गौवंश

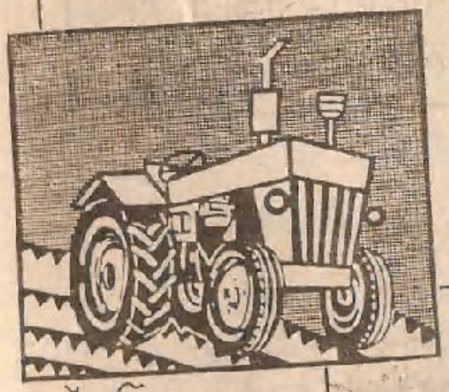

वर्तमान में देश के कृषि कार्य में ८ करोड़ बैल प्रयुक्त है। यदि ये नहीं होंगे तो हमें इनके बदले में २ करोड़ ट्रेक्टर्स की आवश्यकता होगी जिनकी लागत होगी ४० खरब रुपये। और उन्हें चलाने के लिये डीजल हेतु ६४० अरब रु. अलग से!

◉ ट्रेक्टर मँहगा • प्रदूषणकारी • निरंतर घिसते हुऐ नष्ट • भूमि को हानि केंचुए आदि कृषि हितकारकों का नाशक • भारत के छोटे-छोटे खेतों एवं प्राकृतिक भू रचना के अनुकूल नहीं • विदेशी निर्भरता •

◉ गौवंश • सस्ता • प्रदूषण रहित • लगातार वृद्धि • मरने के बाद भी उपयोगी • शक्तिहीन होने पर भी गोबर-मूत्र द्वारा प्राकृतिक खाद • छोटे बड़े सभी खेतों एवं देशी भूसंरचना के अनुकूल • भूमि को लाभ •

भारत में ट्रेक्टर द्वारा खेती 10% बैलों द्वारा खेती ९0%
ट्रेक्टर जितनी खेती तो भारत में भैंस-पाड़ो से ही हो जाती है।

संदर्भ - इंस्टीट्यूट ऑफ इकोनामिक्स ग्रोथ दिल्ली द्वारा विशेष

पशुपतिनाथ भगवान शंकर के वाहन वृषभ सिर्फ शक्ति के ही नहीं धर्म सदाचार के प्रतीक भी है। इन्हें नष्ट करना अपनी संस्कृति, सभ्यता, सदाचार सभी को नष्ट करना है।

भारत एक विशाल देश है जो 5,66,878 गाँवों (82 प्रतिशत आबादी) में बसा हुआ है। इतने विशाल भूभाग में 6800 रेलवे स्टेशन, 58,300 कि. मी. रेलवे लाइन, 23818 कि॰मी॰ राष्ट्रीय राजमार्ग एवं 2,83,640 कि॰मी॰ सड़क मार्ग हैं। जो इस विशाल क्षेत्रफल को देखते हुऐ बहुत ही कम है। हमारे अधिकांश गाँव आज भी इनसे जुड़े हुऐ नहीं हैं।

देश के कृषि तथा उद्योगों के लगभग 1 हजार मिलियन टन उत्पादन को खेतों से फैक्ट्रियों तथा फैक्ट्री से उपभोक्ता केन्द्रों तक लेजाना पड़ता है। रेलवे की 3,58,000 वेगनों के माध्यम से 180 मिलियन टन एवं 2,20,000 ट्रकों के द्वारा 120 मिलियन टन माल की ढुलाई होती है (कुल 30%)

शेष 700 मिलियन टन माल यानि **70%** ढुलाई अब भी 1.21 मिलियन बैलगाड़ियों द्वारा ही की जाती है।

(1 मिलियन = दस लाख)

॥इस भारी ढुलाई के अतिरिक्त भी बैलों का भारी योगदान है॥

संदर्भ - गाय का चिरकालिक सच्चा अर्थशास्त्र - अखिल भारतीय कृषि गौसेवा संघ (1990) वर्धा

"एक बैल को मारना एक मनुष्य को मारने के समान है" -ईसा मसीह

1988 में भारत में 264 मिलियन घन मीटर लकड़ी थी जिसमें से 250 मिलियन क्यूबिक मीटर लकड़ी सिर्फ जलाने में प्रयोग की गई. यदि गोबर ना मिले तो ईंधन हेतु 6.80 करोड़ टन लकड़ी जलाई जायेगी.

देश की एक बड़ी आबादी ईंधन हेतु गोबर के कंडों को जलाती है। गौवंश की कमी के साथ ही साथ इस हेतु लकड़ी का प्रयोग बढ़ रहा है। फलतः वृक्षों की अंधाधुंध कटाई की जा रही है। ..... जंगल नष्ट हो रहे हैं .... अनियमित वर्षा .... भीषण गर्मी और प्राकृतिक असंतुलन ----- अंत में सर्वनाश !!!

सामना में श्रीमती मेनका गांधी एवं कल्याण में श्री पुरुषोत्तमदास झुनझुनवाला.

गौ रिति पृथिव्या नामधेयम् (निरुक्त २-११)
"गौ" यह पृथ्वी वाचक है।
गो हत्या - संपूर्ण पर्यावरण की क्षति! विनाश को आमंत्रण!!

"माँ के दूध के बाद गाय का दूध ही सर्वश्रेष्ठ आहार है" वैज्ञानिक परीक्षणों से यह सिद्ध होचुका है। गाय का दूध स्फूर्तिदायक है।

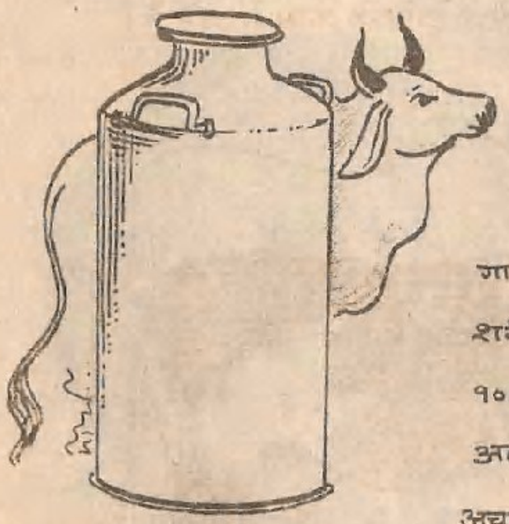

गाय के दूध-दहीघी में शरीर के लिये लाभकारी १०० से अधिक तत्वों के अलावा पर्यावरण शुद्धि की अचूक क्षमता भी निहित है।

महर्षि दयानंद ने सम्पूर्ण हिसाब लगाकर सिद्ध किया था कि- एक गाय और उसके वंश के दूध और उत्पादित अन्न से ४,१०,४४० (चारलाख दस हजार-चार सौ चालीस) मनुष्यों को एक बार का भोजन मिल सकता है। जबकि उसके मांस से केवल ८० आदमियों को सिर्फ एक बार तृप्ति मिलेगी.

संदर्भ- गौकरुणानिधि ले. दयानंद सरस्वती जी महाराज

गव्य पवित्र च रसायन च, पथ्यं च हृद्यं बल बुद्धिदं स्यात।
आयुः प्रदं रक्त विकार हारि त्रिदोष हृद्रोग विषापहं स्यात।

दूध की मात्रा को ही गाय की उत्तमता का मापदण्ड मानने वालों ने नस्ल सुधार के नाम पर वर्णसंकर जर्सी गाय को बढ़ावा दिया। "यूरास" के अंश से गौवंश विकृत कर दिया। जो ना श्रद्धा के योग्य है ना पूजा के। इसके दूध में वैसे तत्व नहीं हैं. और ना ही इससे उत्पन्न बैल कृषि के काम में आते हैं।

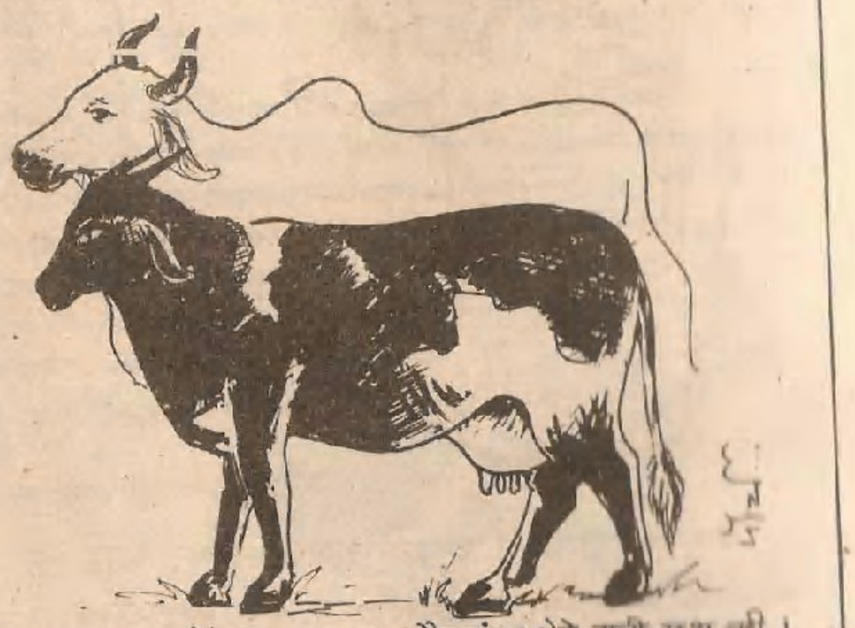

भारतीय गाय विदेशों की तरह दूध और मांस देने वाली पशु नहीं। कृषि प्रधान भारत की रीढ़ है। दूध के मामले में सिद्ध हो चुका है कि, देसी गाय जर्सी गाय से अधिक दूधदेसकती है अगर उसे वैसा ही पौष्टिक आहार आदि मिले। इजराइल में भारतीय गायें सर्वाधिक दूध दे रही हैं। गाय के बछड़े की गतिशीलता और शैल-जर्सी के बछड़ो-पाड़ों की सुस्ती से दोनों के दूध का अन्तर समझ सकते हैं।

* ब्रह्मलीन पू. श्री डोंगरे जी महाराज

एकांगी (केवल दूध या बछड़ेवाली) नस्ल की उपयोगिता का प्रचार करके हमारे देश के लोगों को भुलावे में डाला जा रहा है। - डा. राजेन्द्र प्रसाद

"गोमूत्र" एक कीटनाशक * औषधि

प्रत्येक गोवंश वर्ष में 1.5 लमूत्र देता है। जिसमें 28 किलो नाइट्रोजन 28 किलो फास्फोरस और 27.30 किलो पोटाश होती है। इसके अतिरिक्त गंधक अमोनिया, मेग्जीन, यूरिया साल्ट, कापर एवं अन्य क्षार भी गोमूत्र में रहते हैं। यदि इन सभी तत्वों का सही उपयोग किया जाये तो देश के सम्पूर्ण गोवंश से प्राप्त मूत्र का मूल्य 80-90 अरब रुपये होता है।

यह गोमूत्र एक निरापद कीटनाशक है। जो हानिकारक कीड़ों का नाश तो करता ही है साथ ही भूमि की उर्वरा शक्ति को भी बढ़ाता है। सिर्फ कृषि ही नहीं वातावरण शुद्धि के लिये घर में भी गोमूत्र का छिड़काव किया जाता है।

आयुर्वेद एवं नव चिकित्सा विज्ञान की दृष्टि से गोमूत्र एक परमोपयोगी रसायन एवं पूर्ण औषधि है। चरक संहिता, राज निघन्टु, वृह वाग भट्ट, अमृत सागर, अजायबउल मखलूकात (फारसी ग्रंथ), कलर हीलिंग (वैज्ञानिक रूप दर्शन) आदि ग्रंथों में अनेक असाध्य रोगों की गोमूत्र चिकित्सा का वर्णन किया गया है। विदेशों में भी गोमूत्र चिकित्सा को प्रभावी बनाने के लिये "फोटो थेरेपी" का सहारा लिया जा रहा है। कोढ़, बवासीर, मधुमेह, नपुंसकता गंजापन, चर्मरोग, पुराना कब्ज, रक्तचाप, अनिद्रा नेत्र विकार, सफेद दाग आदि अनेकों रोगों की रामबाण दवा के साथ ही गोमूत्र मस्तिष्क के शक्ति वर्धक जीवनी शक्ति है। अमृततुल्य है।

गोमूत्रे त्रिदिनं स्थाप्य विषं तेन विशुद्धयति। (आयुर्वेद)
गोमूत्र में मात्र तीन दिन पड़े रहने से विष शुध्द हो जाता है।

गाय का गोबर मल नहीं .... मलशोधक है !

भारत की शास्त्रीय मान्यता है कि गाय के गोबर में लक्ष्मी का वास है। दीवाली के दिन गाय की एवं दूसरे दिन गोबर की पूजा गोबर धन (गोवर्धन) भी की जाती है। ईंधन-खाद से भी अधिक घरों की लिपाई हेतु गोबर का महत्व है। पवित्रता का प्रतीक है।

विदेशों में हुऐ वैज्ञानिक प्रयोगों से सिद्ध भी हो चुका है कि "जिन घरों मे गोबर की लिपाई होती है उनमें परमाणु विकिरण या रेडियो धर्मिता का दुष्प्रभाव नहीं होता।

लिपाई के अलावा भी गोबर के अनेक उपयोग है। इसके गैस से उर्जा, खाद एवं जलाने से वातावरण शुद्धि होती है। शेष बची राख भी एक अच्छी उर्वरक व कीटनाशक है। बर्तन सफाई का निरापद पावडर है। पूना एवं पुसद (महाराष्ट्र) में गोबर से एक लेप तैयार किया है जो कि शीतताप रोधी (वातानुकूलित) आवरण का काम करता है।
(महाराष्ट्र चेम्बर ऑफ कामर्स ने इस आविष्कार को पुरस्कृत भी किया है)

यद्गोमयाद्यांश्च पुनन्ति लोकान् गोभिर्नतुल्यं धनमस्ति किंचित।
जिसकी गोबर गोमुत्र आदि वस्तुए संसार को पवित्र कर डालती है। ऐसी गौओं के समान अन्य सम्पत्ति नही है।

पीना है तो कोकाकोला-पेप्सी पियो .... विदेशी शराब पियो ..... मिनरल वाटर पियो।
इस पानी में से तुम्हें एक बूंद भी नही....

जिस देश में जनता बूंद-बूंद पानी के लिये तड़प रही हो। और पेयजल के लिये नालियों का गंदा पानी या 12 रु. लीटर का मिनरल वाटर मजबूरी में प्रयोग कर रही हो। उस देश में शुद्ध मांस के लिये अरबों-खरबों लीटर पानी (पेयजल) कत्ल खानों को देना राष्ट्रघाती कृत्य नहीं तो और क्या है?

एक पशु पर 500 लीटर पानी सफाई हेतु खर्च होता है। अलकबीर को प्रतिवर्ष 51 करोड़ लीटर पेयजल एवं देवनार को 18 लाख गैलन पेयजल प्रतिदिन दिया जाता है। यह पानी भूमि को दूषित भी कर रहा है।

संदर्भ- हिन्दुस्तान टाइम्स 9 अप्रेल 1994 नई दिल्ली

बादल मनुष्यों की पुकार नही सुनते। वृक्ष,पशु,पक्षी,पहाड़ सभी से समन्वित पर्यावरण की सुनते है। पशु इसी प्रकार कटते रहे तो अकाल को कोई रोक नहीं पायेगा। - हुकमचन्द सावला

दूधारू पशुओं का कत्ल हर दृष्टि से भारी घाटे का सौदा है। उदाहरण के लिये "अलकबीर यांत्रिक कत्लखाना"

पांच वर्ष तक का कुल शुद्ध लाभ
20 करोड़ रुपया
(जिसमें से अधिकतम विदेशी मालिक को)
सिर्फ 300 लोगों को रोजगार

यदि ये पशु जीवित रहें तो पांच वर्ष में हमें प्राप्त होगा..
— 128 करोड़ रु० दूध, दूधजन्य पदार्थ एवं अन्न से।
— 2253.55 करोड़ रु० 54.45 लाख टन खाद्यान उत्पादन में विभिन्न सहयोग - ऊर्जा - खाद द्वारा।
163.35 लाख टन पशुखाद्य चारा - खली
— 95.40 करोड़ मृत पशुओं के शरीर से प्राप्त आय।
— 3,48,125 व्यक्तियों को रोजगार।

पशु पालन से दूध पावडर, घी, अन्न, रसोई गैस, डीजल एवं रासायनिक खाद के आयात में खर्च की जा रही अरबों रु० की विदेशी मुद्रा बचाई जा सकती है

"सामना" एवं पीपुल्स फार एनीमल में 'मेनका गाँधी' की लेखमाला एवं विनियोग परिवार द्वारा प्रकाशित विश्लेषण के आंकड़ो से

एकत्र मंत्रास्तिष्ठन्ति हविरन्यत्र तिष्ठति
यज्ञमंत्र और गो के विरोधी विश्व जीवन के शत्रु है।

पशुओं के कत्ल से प्राप्त होने वाली वस्तुऐं तो उनकीअपनी प्राकृतिक मौत के बाद देश को प्राप्त होगी ही।

एक और महत्वपूर्ण तथ्य यह भी है कि कत्ल से प्राप्त धन चंद पूंजीपतियों की जेब में जायेगा। यांत्रिक कत्ल खानों से प्राप्त पशुचर्म आदि वस्तुऐं"बाटा" जैसी बड़ी-बड़ी विदेशी कम्पनियों के काम में आता है। जबकि स्वाभाविक मौत से मरने वाले पशु की चर्म-सींग-खुर-बाल आदि सामग्री गांव में बसे लाखों लघु-कुटीर उद्योगों का आधार है। वर्ष में ३६५० रु. का चारा खाकर पशु २०,००० रु. की खाद आदि देता है वह अतिरिक्त ही है। आवश्यकता है इस आधार पर नियोजन करने की। टूटा हुआ अर्थतंत्र पुनः खड़ा करने की।

सोने का अंडा देने वाली मुर्गी को मारकर मूर्ख ने क्या पाया ? रोज मिलने वाला एक अण्डा भी गँवाया। (एक शिक्षाप्रद बाल कथा)

मूर्खता नेता कर रहे हैं...परन्तु फल आपको हमें भुगतना होगा.

गौ का आर्थिक महत्व रहते हुए भी उसे सिर्फ आर्थिक दृष्टि से देखना पाप है।
- पू श्री हनुमान प्रसाद जी पोद्दार

निरुपयोगी शब्द की आड़ में प्रतिदिन हजारों सकलांग स्वस्थ गौवंश यदि इसी तरह कटता रहा तो.....

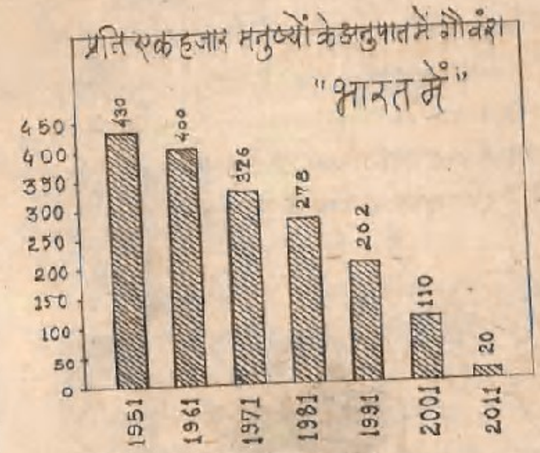

सेन्ट्रल लेदर रिसर्च इंस्टीट्यूट के अखिल भारतीय सर्वे की रिपोर्ट भारत के वाणिज्य मंत्रालय द्वारा नवंबर 1987 में प्रकाशित-पेज-27

हे भूमि बन्ध्या हो रही वृषजाति दिनदिन घट रही।
घी दूध दुर्लभ हो रहा, बल वीर्य की जड़ कट रही।
- राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त

-प्रति एक हजार व्यक्ति के अनुपात में लगातार घट रहा गौवंश-

वर्ष	1951	1961	1971	1981	1991	2001	2011
गौवंश	430	400	326	278	202	110	20

प्रस्तुत आंकड़े सरकार के ही पशु कल्याण बोर्ड द्वारा की गई पशुगणना एवं अनुमान पर आधारित रिपोर्ट से लिये गये हैं। यदि यांत्रिक कत्लखाने शुरू होंगे तो सन् २००५ के पूर्व ही गौवंश लुप्त हो जायेगा.

"Slaughtering animals is Slaughtering our Economy"
Published by Animal Welfare Board of India Ministry of Environment & Forest

"गाय एवं अन्य पशुओं की निर्दयतापूर्वक हत्या जब से प्रारम्भ हुई है, हम अपने बच्चों के भविष्य के प्रति चिंतित हो गये हैं" - लाला लाजपत राय

जंगली पशुओं के लिये अभयारण्य !
पालतू गौवंश के लिये कत्लगाह !!

सरकार शेरों की लुप्त होती प्रजाति को बचाने के लिये करोड़ों रुपये खर्च करके परियोजनायें संचालित कर रही है। दूसरी ओर कुछ विदेशी मुद्रा के लोभ में पालतू पशुओं को कटवाती जा रही है। सरकार की इस दुर्नीति के कारण भारतीय नस्ल की गायों की छः प्रकार की प्रजातियाँ लुप्त हो चुकी हैं। जिनके नाम हैं

- अलमबादी • बिन्छरपुरी • खटियाली •
- पुलिकुलम • बरगुर • रायचुरी •

इतना ही नहीं लाखों टन मेंडक की टांगों और साँपों की खालों का निर्यात करने की कुनीति का दुष्परिणाम रहा कृषि नाशक कीट और चूहे आदि की संख्या बहुत बढ़ गई.... जो सर्प एवं मेंढकों के भोजन थे।

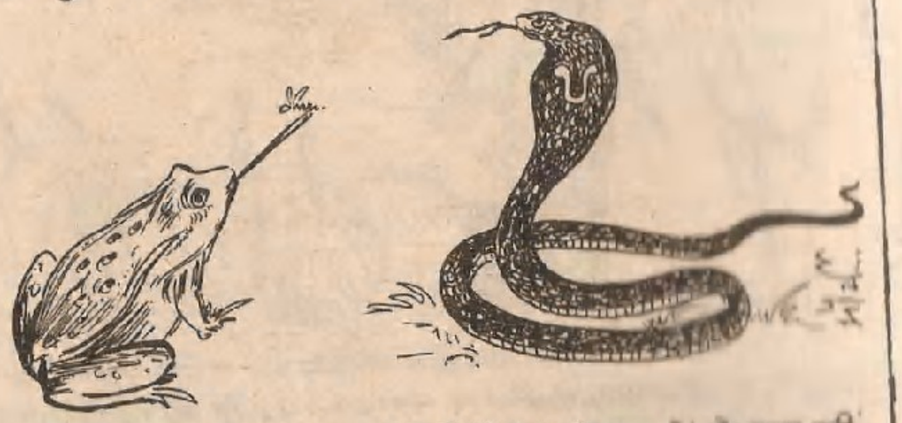

कत्लखानों की समर्थक सरकार तर्क देती है कि "यदि पशुओं को मारा नहीं जायेगा तो पृथ्वी पर मनुष्यों के लिये जगह नहीं बचेगी" सर्वथा झूठ है। प्रकृति अपना संतुलन स्वयं बनाती है। उसमें हस्तक्षेप नहीं होना चाहिये। जरा सोचिये... गिद्ध, गधे, घोड़े आदि की संख्या क्यों नहीं बढ़ी....?

ईश्वरने सृष्टि में जो भी पदार्थ बनाये हैं वे निष्प्रयोजन नहीं जो वस्तु जिस प्रयोजन से रची है। उससे वे ही प्रयोजन लेना न्याय है अन्यथा अन्याय (यजुर्वेद ३६-८)

"पशु" मानव द्वारा छोड़े गये निरर्थक पदार्थों को पुनः सार्थक बनाने का प्राकृतिक संयंत्र

• प्रकृति की व्यवस्थानुसार मानव एवं पशु के भोजन में कहीं एक दूसरे के अधिकारों का उल्लंघन नहीं है। फसल का अन्न मनुष्य का भोजन है तो शेष (कडप - भूसा) आदि पशु का। तेल यदि मानव का आहार है तो शेष खली पशु का। इस प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार पशु मानव पर भार नहीं है। सहयोगी ही है।

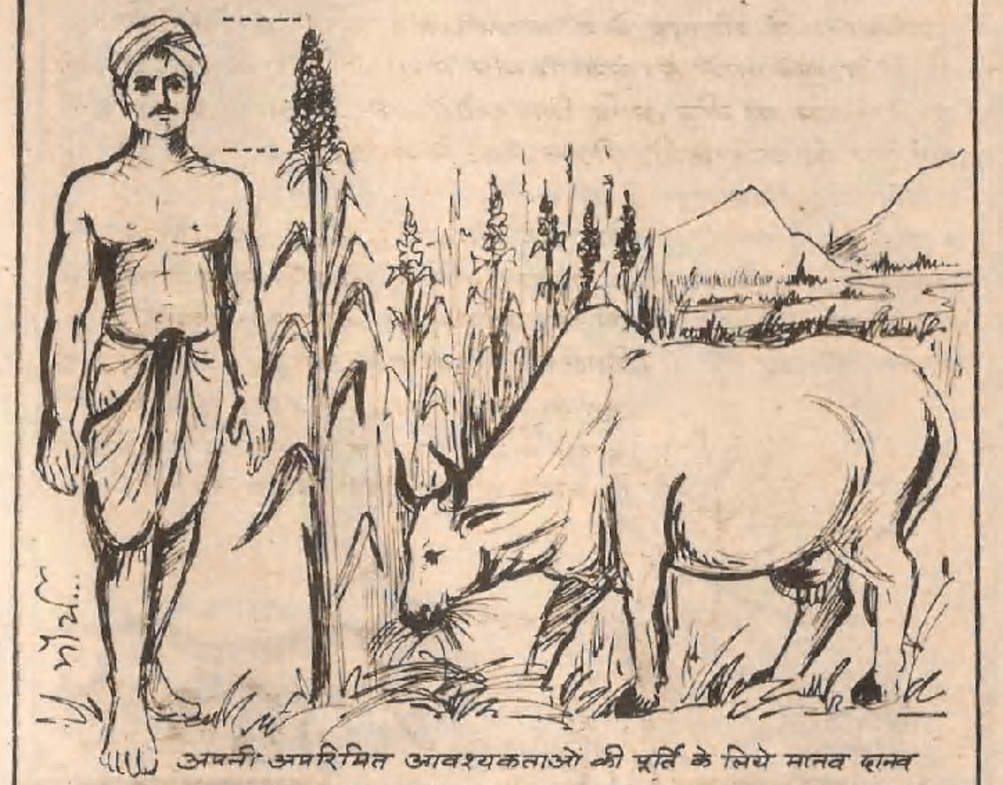

अपनी अपरिमित आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये मानव दानव बनकर मूक पशुओं के अधिकारों पर अतिक्रमण कर रहा है। खली का निर्यात, भूसे का औद्योगिक उपयोग और पशुओं को स्वयं का खाद्य मानकर कत्ल। नये संकर बीजों के प्रयोग से चारा भी कम उत्पन्न हो रहा है।

नमो देव्यै महा देव्यै सुरेभ्यै च नमो नमः।
गवां बीज स्वरुपायै नमस्ते जगदम्बिके॥
- देवी भागवतपुराण ९-४९-२४

"गाय" भारत का सुरक्षा छत्र

आधुनिक संघर्ष के इस भीषण दौर में गोवंश ही एक ऐसा माध्यम है जो भारत की रक्षा कर सकता है। कोई भी देश यदि भारत के ५-६ प्रमुख नगरों पर बम वर्षा कर दे या पुल आदि तोड़कर संचार और परिवहन व्यवस्था को खत्म कर दे तो पूरा देश पंगु बन जायेगा। वैसे भी युद्ध के दौरान अधिकांश साधन सेना के लिये ही सुरक्षित रखे जाते हैं। ऐसी स्थिति में ना तो खेतों को खाद, बिजली, पानी डीजल या बीज आदि मिल पायेंगे और ना अन्न-दूध आदि की आपूर्ति की जा सकेगी। डीजल संकट के समय इसकी झलक दिखती है.

ऐसे घोर संकट में एकमात्र आशा की किरण है...
.... गोवंश। जो खाद की चलती फिरती फेक्ट्री है.
दूध और औषधि का अक्षय भंडार है. स्वावलंबी (डीजल रहित) ट्रेक्टर है। परमाणु रेडियो धर्मिता से रक्षा का सुरक्षा कवच है। जब तक गाय की यह कवच भारत के पास रहेगा तब तक भारत दुर्जेय ही नहीं अजेय रहेगा.

॥ गोवंश का कोई पूर्ण विकल्प नहीं. ॥

गांवो विश्व मातरः। गावो रक्षन्ति रक्षितः।
यदि हम गाय की रक्षा करेंगे तो गाय हमारी रक्षा करेगी।
महामना पं. मदन मोहन मालवीय

100 करोड़ की विशाल आबादी वाला भारत .....यह कोई कांक्रीट के चंद शहरी जंगलों में नहीं....प्रमुख रूप से गाँवों में बसा है। ये गांव जिन्दा हैं मूलतः कृषि आधारित धंधों पर। और कृषि आधारित है मुख्यतः पशुओं पर ..गौवंश पर। पशुपालन का अर्थ है इस देश को जीवन शक्ति प्रदान करना और इनकी हत्या का अर्थ है देश की अर्थ व्यवस्था की गरदन पर छुरी चलाना।

यथा सर्वमिदं व्याप्तं जगत् स्थावर जंगमम्।
तां धेनु शिरसा वन्दे भूतभव्यस्य मातरम्॥ महाभारत
अर्थात् सम्पूर्ण चल-अचल जगत को जिसने धारण किया है जो भूत और भविष्य की जननी है उस गोमाता के समक्ष नतमस्तक हूँ अर्थात् नमन करता हूँ।

स्मरण रहे ! यह जघन्य कांड गोपाष्टमी को इन्दिरा शासन में हुआ था, गोमाता का दिन अष्टमी को होता है। संजय गांधी की दुर्घटना में मृत्यु अष्टमी को हुई। स्वयं इंदिरागांधी की हत्या गोपाष्टमी को ही हुई। एवं उनके दूसरे पुत्र राजीव गांधी की बम बिस्फोट में मृत्यु भी अष्टमी को ही हुई। .... गोहत्या का अनुमोदन - वंश नाश को आमंत्रण ॥

"गाय उन्नति और प्रसन्नता की जननी है। गाय कई प्रकार से अपनी जननी से भी श्रेष्ठ है" - महात्मा गांधी

"भारतीय संविधान में पहली धारा सम्पूर्ण गोवंश हत्या निषेध होनी चाहिए"
-पं.मदन मोहन मालवीय जी की अन्तिम इच्छा

प्रसिद्ध गांधीवादी संत विनोबा भावे ने गौरक्षा हेतु अनेक बार सरकार से मांग की। अनशन, उपवास धरनों आदि द्वारा सत्याग्रह किया! बदले में उन्हें क्या मिला....?

१२ वर्षों से संत विनोबा भावे द्वारा प्रारंभ सत्याग्रह बम्बई के देवनार कत्लखाने के द्वार पर अनवरत चल रहा है। और अन्दर गौवंश की निर्बाध हत्या जारी है!

उपवासों का तो उपहास उड़ाता है शैतान।
उसके लिये उचित है केवल प्रभु राम के बाण।।
शक्ति से ही शांति संभव है। - बाबा

उंकल के पालतू तोते की तरह छद्म बुद्धिजीवी एवं नेता "निरुपयोगी पशु" का हौव्वा खड़ा करके देश में भ्रम पैदा कर रहे हैं। यदि इन पशुओं के गोबर का भी सही उपयोग किया जाये तो उन पर हुऐ खर्च से कई गुना आय प्राप्त की जा सकती है।*बूढ़े एवं बीमार पशुओं का गोबर खाद के लिये और भी अच्छा होता है।

*भारत सरकार की ही एक पत्रिका "उन्नत कृषि मई १९९३ से

यदि नो गां हंसि यद्यश्वं यदिपुरुषम्।
तं त्वा सीसेन विध्यामो यथा नोऽसो अवीरहा।। (अथर्ववेद १-१६-४)
यदि तूने हमारे गौ अश्व पुरुष आदि को मारा तो हम तुझे सीसे से भून देंगे

गोहत्या के जिम्मेदार नेताओं-दलों को वोट देना भी गोहत्या के पाप में अप्रत्यक्ष रूप से भागीदार होना ही है !

कांग्रेस आई और कसाई । चोर-चोर मौसेरे भाई ॥

गौ को मारने वाले, उसका मांस खाने वाले तथा उसकी हत्या का अनुमोदन करनेवाले पुरुष, गौ के शरीर में जितने रोएँ होते है, उतने वर्षों तक नरक में पड़े रहते है।

(महाभारत अनुशासन पर्व ७४-३-४)

यदि संसार में हिन्दू कहला कर जीवित रहना चाहते है तो सर्वप्रथम प्राणप्रण से हमें गोरक्षा करनी होगी।

- पूज्य प्रभुदत्त जी ब्रह्मचारी महाराज

आज भारत भूमि पर गौरक्त की एक बूंद क्या..... नदियाँ बह रही है। इसीलिये बड़े-बड़े धार्मिक अनुष्ठानों का भी कोई प्रत्यक्ष असर दिखाई नहीं देता । अतः प्रथमतः आवश्यक हैं भारत भूमि से सम्पूर्णतः गौहत्या का त्रास मिटाना ।

— श्री अशोक सिंहल

बूढ़े गाय बैल, पशु काटने के लिये कत्लखाने आवश्यक बताने वाले सरकारी नेता कल बूढ़े माँ-बाप के लिये भी यही योजना बना सकते हैं। यह घोर कृतघ्नता पशुओं से प्रारंभ होकर मानव तक पहुंचेगी। इसे यहीं रोकना आवश्यक है।

- साध्वी ऋतंभरा (अध्यक्षा अ.भा. दुर्गा वाहिनी)

गोघातीनीति के विरुद्ध सतत संघर्ष का लेखा जोखा

सन १९२१ के गोपाष्टमी सम्मेलन में महात्मा गांधी ने यह प्रस्ताव पारित कराया था कि अंग्रेज सरकार गोवधपर कानून पावन्दी नहीं लगाती तो देशभर में सरकार से असहयोग किया जायेगा. यह सम्मेलन दिल्ली के पाटोदी हाउस में हुआ था। सम्मेलन में हकीम अजमल खां, डा. अंसारी, लाला लाजपतराय, पंडित मोतीलाल नेहरू, पं. मदनमोहन मालवीय आदि कांग्रेस के कई नेता उपस्थित थे। इसके बाद कांग्रेस के अधिवेशनों के साथ-साथ गोरक्षा सम्मेलन भी किये जाने लगे। गोरक्षा को आजादी का अनिवार्य शर्त घोषित किया जाता रहा।

आजादी का समय आया। लाला हरदेव सहाय, सदगुरू प्रताप सिंह जी नामधारी, और श्री. [illegible] सिंह जी आलम के नेतृत्व में एक प्रतिनिधि मंडल पं. जवाहरलाल नेहरू से मिला। पं. नेहरू से कहा गया कि १५ अगस्त १९४७ को होनेवाली आजादी की प्रथम घोषणा में ही वे गोवध बंदी की घोषणा कर दें। पं. नेहरू ने इंकार कर दिया। वे बोले "मैं आश्वासन देता हूं कि गोरक्षा के प्रश्न पर एक विशेषज्ञ समिति गठित की जायेगी। समिति की रिपोर्ट पर पूरा अमल होगा"।

डा. राजेन्द्र प्रसाद जी जो बाद में प्रथम राष्ट्रपति बने उन दिनों खाद्यमंत्री थे। केन्द्रीय सरकार के कृषि मंत्रालय ने १९ नवम्बर १९४७ को गोरक्षा एवं उन्नति कमेटी गठित होने की घोषणा कर दी। इस समिति ने ६ नवम्बर १९४८ को रिपोर्ट दी। रिपोर्ट के प्रथम वाक्य में ही कहा गया था कि 'जब तक कानून के द्वारा गोहत्या सम्पूर्णतया बंद नहीं होगी देश में तब तक संतोष नहीं होगा।' इसके लिए समिति ने कहा कि 'दो वर्ष के अन्दर अन्दर गोवंश की हत्या बंद करने का कानून लागू कर दिया जाए।' सन् १९४९ में खाद्यमंत्री श्री जयरामदास दौलतराम ने २४ मार्च को समिति का निर्णय स्वीकार भी कर लिया।

जनता केवल कानून बनानेवाली बात से संतुष्ट नहीं थी। लोग चाहते थे कि गोवध बंदी को मौलिक अधिकार घोषित किया जाये। इसकी मांग करते हुए ६०,००० तार केन्द्र सरकार को भेजे गये और जनता से पत्र इतनी बड़ी संख्या में आये कि सरकार को इन्हें गिनने के बजाय तोलना पड़ा।

मौलिक अधिकार वाली बात स्वीकार नहीं की गई। परन्तु संविधान की धारा ४८ में गाय, बछड़े, बछड़ी, हल खींचने और बोझा होने वाले और दूध देनेवाले सभी पशुओं की हत्या के निषेध को राज्य की नीति घोषित कर दी गई।

सन् १९२१ से लेकर १९४८ के गोहत्या निरोध के सारे प्रयत्नों पर जिस एक व्यक्ति ने पानी फेर दिया वे थे भारत के लाडले प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू। सन् १९४९-५० का कांग्रेस अधिवेशन दिल्ली में हुआ। पं. जवाहरलाल नेहरू से जब पूछा गया तो उन्होंने हिकारत भरी आवाज में कहा कि विशेषज्ञ समिति की रिपोर्ट कृषि मंत्रालय के किसी कोने में पड़ी होगी। और, २० दिसम्बर १९५० को केन्द्रीय कृषि मंत्रालय ने सब राज्य सरकारों को परिपत्र लिखकर सूचित कर दिया कि दारा ४८ का मतलब सम्पूर्ण गोवध निषेध नहीं है. केवल उपयोगी पशुओं की हत्या बंद करनी है।

जनता में भीषण आक्रोश छा गया. परम गोभक्त स्वामी रामचन्द्र शर्मा वीर ने जगह-जगह पर अनशन किये। स्वामी करपात्री जी महाराज के नेतृत्व में हजारों लोग जेल गये। परन्तु भारत सरकार के कानों पर जूं तक नहीं रेंगी।

दिनांक १० सितम्बर १९५२ को राष्ट्रीय स्वयंसेवक ने जनजागरण की घोषणा की। वयस्क मतदाताओं के हस्ताक्षर एकत्रित करने का बीड़ा संघ के स्वयंसेवकों ने उठाया। केवल चार सप्ताह में देशभर से १,७५,७३,२२७ हस्ताक्षर एकत्रित किये गये। इन पौने दो करोड़ हस्ताक्षरों को लेकर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के तत्कालीन सरसंघचालक परम पूजनीय श्री गुरु जी दिल्ली आये। अनेक संस्थाओं के प्रतिनिधियों के साथ श्री. गुरु जी राष्ट्रपति श्री. राजेन्द्र प्रसाद से मिले। केवल ४ सप्ताहों में एकत्रित पौने दो करोड़ हस्ताक्षरों वाले गोरक्षा सम्बन्धी प्रचण्ड जनमत को राष्ट्रपति के हाथों सौंप दिया।

दिनांक २२ फरवरी १९५३ को आर्य समाज की सार्वदैशिक प्रतिनिधि सभा ने आन्दोलन का प्रस्ताव पारित किया। सम्मेलन हुए। गोरक्षक जनता ने लाखों की संख्या में प्रतिज्ञा पत्र भरे।

इतना ही नहीं पं. जवाहरलाल नेहरू के चुनाव क्षेत्र में दिसम्बर १९५३ से जनवरी १९५४ के बीच गोवध बंदी पर मतसंग्रह कराया गया। पं. नेहरू कुल २,३३,५७१ मत पा कर चुनाव जीते थे. इस चुनाव क्षेत्र के २,४८,४२२ वयस्क नागरिकों ने गोवध बंदी के प्रस्ताव पर हस्ताक्षर कर दिये। यानी ४८५१ अधिक मतों से कानूनन गोवध रोकने की जन भावना पं. नेहरू के पास पहुंचाई गई। पर पं. नेहरू अपनी जिद्द पर फिर भी अड़े रहे।

तब ४ फरवरी १९९४ को पूज्य प्रभुदत्त ब्रह्मचारी जी की प्रधानता में गोरक्षा सम्मेलन हुआ और अखिल भारतीय गोहत्या निरोध समिति बनी। समिति ने गौ के प्रश्न को जनता के मौलिक अधिकारों का प्रश्न माना। पूज्य प्रभुदत्त ब्रह्मचारी नित्य गंगास्नान के व्रती थे। वे अपने कमंडल में गंगा जी को लेकर जनमत जागरण को निकल पड़े। मथुरा के कसाई खाने पर सत्याग्रह की घोषणा की गई। उस वर्ष २१ अगस्त को कृष्ण जन्माष्टमी थी। कसाई १४ अगस्त को ही कसाईखाने पर ताला लगाकर भाग खड़े हुए।

२७ सितम्बर १९५४ को लखनऊ की विधानसभा के सामने सत्याग्रह प्रारंभ हुआ दि. ८ सितम्बर १९५५ को विधानसभा ने गौवध निवारण कानून पारित कर दिया। परन्तु बिहार सरकार नहीं मानी। ७ सितम्बर को पूज्य प्रभुदत्त जी और लाला हरदेव सहाय को पटना में गिरफ्तार कर लिया गया। दिनांक १२ सितम्बर को वहां भी सत्याग्रह में जनता उमड़ पड़ी और ५ अक्तूबर १९५५ को बिहार सरकार ने भी गोवध निषेध कानून पारित कर दिया।

पं. नेहरू बुरी तरह बौखलाए। उन्होंने कहा "त्याग पत्र दे दूंगा परन्तु गौवध बंदी के सामने झुकूंगा नहीं।" उन्होंने २ अप्रैल १९५५ को लोकसभा गरजते हुए कहा कि " मैं राज्य सरकारों को भी यह सुझाव दूंगा कि वह न गौवध निषेध कानून उपस्थित करें और न ही पास होने दें।" फरवरी १९५५ में ही नेहरू सरकार के स्वास्थ्य मंत्रालय ने गाय, बैल आदि पशुओं के भिन्न भिन्न अंगों से दवाई तैयार करने के लिये राज्य सरकारों को पत्र लिखा तथा देहली और बम्बई में बड़े-बड़े कसाई खान खोजने का सुझाव दिया और तजबीज की।

इतना ही नहीं नेहरू जी के जमाने में पशु नसल सुधार कमेटी द्वारा ३१ जनवरी १९५१ को प्रकाशित रिपोर्ट के पृष्ठ २३ पर यह सुझाव भी दिया गया था कि " जनता के भोजन में परिवर्तन और धार्मिक भावना में क्रान्ति करके फालतू गोवंश को भोजन के प्रयोग मे लाया जाये अर्थात गोमांस खाना चाहिए।" फिर भी उत्तर प्रदेश, बिहार, पंजाब और मध्य प्रदेश में कानून बन गये। परन्तु नेहरू जी का रुख देखकर कानूनों पर ठीक अंमल नहीं किया गया। उल्टे गोहत्यारों ने सर्वोच्च न्यायालय में चुनौती दी। सर्वोच्च न्यायालय की पूरी पीठ ने २३ अप्रैल १९५८ को एक स्वर से निर्णय गोवध बंदी के पक्ष में दिया। गाय, बछड़े, बछडी की हत्या को सम्पूर्णतया बंद करने की कार्यवाही को वैध माना गया। मुसलमानों को गोहत्या करने के धार्मिक अधिकार वाली बात भी अमान्य कर दी गई। फिर भी सर्वोच्च न्यायलय ने नेहरू रूख को पहिचान कर एक टंगड़ी लगा ही दी।

उनके निर्णय में केवल उपयोगी सांड और बैलों के वध पर रोक स्वीकार की गई। अनुपयोगी सांडों और बैलों को कटने देने की छूट रही। कत्लखानों और कसाइयों को खुशी हुई कि वे जनता की आंख में धूल झोंकने का काम बदस्तूर जारी रख सकते हैं। गोवंश को अनुपयोगी बताओं और काटते रहो। कानून साथ दे रहा है। पशुओं की टांगे तोड़ दो, सींग

काट दो, उनके शरीर में घाव कर दो। काट डालो। फिर बैल के नाम पर गायें भी काटो। थोड़ी रिश्वत देना होगी। दे दो संविधान के अनुसार कसाइयों को मौलिक अधिकारों में संरक्षण प्राप्त हुआ जब कि गौ का प्रश्न भारतीय जनता के मौलिक अधिकार का प्रश्न नहीं बन पाया। गायें कटती रहीं। अच्छी जवान गायें ही कसाई काटते रहे। कारण बछड़े-बछड़ी की हत्या में एक सौ प्रतिशत यानी दो गुणा अधिक लाभ कसाई को होता है। कसाइयों का यह गोरख धंधा सर्वोच्च न्यायालय को बताया गया कि सरकारी पशु गणना के अनुसार सन् १९५५-५६ में गाय बछड़ों की ८०,७०,३६३ खालें निर्यात की गई जबकि सन् १९४६-४७ में [illegible] जब देश गुलाम था तब ७,४५,००० खालें निर्यात हुई थी। न्यायालय ने अनसुनी की।

१९६२ में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने पुनः बड़ा आंदोलन प्रारंभ किया परन्तु चीन द्वारा युद्ध छेड़ देने पर इसे वापस लेना पड़ा। ७ नवम्बर १९६६ को लाखों गोभक्तों ने संसद के समक्ष प्रदर्शन किया। शान्तिपूर्ण प्रदर्शनकारियों पर गोली चलाकर सरकार ने अपनी बर्बरता तथा गो विरोधी होने का परिचय दिया। सैकड़ों गो भक्त इस अवसर पर बलिदान हो गये। आज भी प्रतिवर्ष ७ नवम्बर को उसी स्थल पर नियमित रूप से बलिदानियों को श्रद्धांजलि दी जाती है।

वर्ष १९६६ में पुरी के पूज्य शंकराचार्य महाराज ने, दिल्ली में ही उसी सिलसिले के निमित्त में, आमरण अनशन किया था। आवश्यक कानून बनाकर गो हत्या पर प्रतिबन्ध लगाया जायेगा ऐसा सरकार द्वारा आश्वासन मिलने पर ७८ दिन के बाद उन्होंने अपना अनशन समाप्त किया था।

आचार्य विनोबा भावे का आमरण अनशन उस आश्वासन के साथ कि आवश्यक कानून बनाकर गोहत्या पर प्रतिबन्ध लगाया जायेगा, समाप्त करा दिया गया था।

उपर लिखे महापुरुषों का अनुसरण करते हुए पूज्य ब्रह्मचारी प्रभुदत्त जी, [illegible] जी, सरीखे अन्य कई महानुभावों ने गो हत्या पर कानूनी प्रतिबन्ध लगाने हेतु अनशन किया। परन्तु सत्ता मद में अंधे कांग्रेसी नेताओं ने और नये नये कत्लखाने खुलवा दिए।

स्थिती भयंकर होती गई। आज श्रीमती मेनका गांधी के अनुसार केवल दिल्ली के ईदगाह बूचड़खाने में ही प्रतिदिन १३००० पशु मारे जाते है और १३ हजार लीटर खून प्रतिदिन बहकर यमुना में आता है। देश में हजारो बूचड़खाने खुल गये हैं। बम्बई में देवनार बूचड़खाना एशिया का दूसरे नम्बर का सबसे बड़ा कत्लखाना है जहां ईद के दिन ४००० बैल और बछड़े काटे गये। आंध्रप्रदेश के मेडक जिले के पटनचेरू ग्राम में अलकबीर यांत्रिक कत्लखाना सन् १९८९ से काम कर रहा है।

स्थिति की विभीषिका एवं विभिन्न संगठनों आदि द्वारा चलाये जा रहे आंदोलनों का विशेष फल ना मिलता देख विश्व हिन्दू परिषद ने स्वयं इस आंदोलन को अखिल भारतीय यांत्रिक कत्लखाने हटाओ समिति के माध्यम से अपने हाथ में ले लिया।

रामशंकर अग्निहोत्री

- वरिष्ठ पत्रकार

यांत्रिक कत्लखानों के विरुद्ध नव संघर्ष

देश के सबसे बड़े यांत्रिक कत्लखाने अलकबीर के विरुद्ध १ जनवरी १९९४ से विराट आंदोलन चल रहा है।

अलकबीर कत्लखाना सबसे पहले महाराष्ट्र के भिवंडी में स्थापित हुआ लेकिन प्रबल जन आंदोलन, के फलस्वरुप गोली चालन की स्थिति बनी जिसमें कई लोग हताहत हुए। मजबूर होकर महाराष्ट्र सरकार ने कत्लखाने के मालिकों को ४ करोड़ ४७ लाख रु. मुआवजा देकर हटा दिया। बाद में कर्नाटक राज्य के दौरान बैंगलोर में इसे लागने के प्रयास किए गए। जमीन दी गई जिस पर भवन निर्माण प्रारंभ हुआ। स्थानीय नागरिकों में कत्लखाने के प्रति प्रारंभ से ही रोष था। अतः वर्ष १९८९ में जब राम जन्मभूमि आंदोलन के दौरान अयोध्या में विवादास्पद ढांचे पर कारसेवक झंडा फहरा रहे थे। तब राम भक्त और गो भक्त इस कत्लखाने के खिलाफ आंदोलन में सक्रिय हुए। परिणाम स्वरूप कत्लखाना टूटा और वहाँ राम मंदिर बना दिया गया। न्यायालय ने भी आंदोलनकारियों के पक्ष में दिए निर्णय में राम मंदिर बना रहा जो आज भी स्थित है।

अलकबीर यांत्रिक कत्लखाना सबसे बड़ा कत्लखाना है इसे बंद कराने के लिये आंध्रप्रदेश और सम्पूर्ण देश में स्थान स्थान पर धर्म रथ-यात्राएं, साधु-सन्तों के विभिन्न स्थानों पर प्रवास एवं प्रवचन तथा भिन्न-भिन्न स्थानों पर १००८ यज्ञों का अनुष्ठान किया गया। अन्तिम यज्ञ दिवस २६ सितम्बर १९९४को हैदराबाद की ओर सम्पूर्ण देश से लाखों गोभक्तों तथा सन्तों ने प्रस्थान किया। अनेक सरकारी बाधाओं के रहते २५ से ३० हजार लोग रुद्रारम यज्ञ में भाग ले सके और लगभग ५८ हजार लोग पकड़ कर जेल में बन्द कर दिये गये। फलस्वरुप २१ सितम्बर ९४ को अलकबीर के कामकाज को अस्थायी रुप से बन्द रखने की मालिकों को घोषणा करनी पड़ी। आन्दोलन अभी जारी है।

देश के अन्यभागों में प्रारम्भ होने वाले कई यान्त्रिक कत्लखानों के विरूद्ध भी आन्दोलन चलरहा है जिसमें यान्त्रिक कत्लखाना डेराबस्सी (पंजाब) और जैन देवस्थान तिजारा के समीप हरियाणा व राजस्थान सीमा पर स्थित कत्लखाने सम्मिलित हैं। ग्लोबल फूडस लि. गाजियाबाद कत्लखाने की निर्माणाधीन बिल्डिंग आन्दोलनकारियों द्वारा गिरा दी गई। डेराबस्सी के कत्लखानों को न चलाने का आश्वासन मुख्यमंत्री पंजाब द्वारा दिया गया। सट्टी बूचरङखाना अकबरपुर जि. कानपुर बन्द हुआ, नूरपुर जनपद दादरी जि. गाजियाबाद अवैधानिक कत्लखाना स्थानीय जनता ने उखाड फेंका।

यान्त्रिक कत्लखानों को बन्द कराने का आन्दोलन, मांस निर्यातनीति का पुरजोर विरोध एवंम गोरक्षा-पालन संवर्धन हेतु विभिन्न कार्य जारी है।

इस महान कार्य में अनेकों सामाजिक धार्मिक संस्थाये व्यक्ति लगातार संघर्षरत हैं। उन जानी-अनजानी सभी गो भक्त विभूतियों को सादर नमन करते हुए गोरक्षा हेतु पुनर्चेतना का आव्हान।

– हुकुम चन्द सावला
संगठन मंत्री अ.भा.यांत्रिक कत्लखाने हटाओ समिति

'सिन्दूर से तन्दूर' तक की कांग्रेसी यात्रा ने देश को दूध-दही की जगह खून की नदियाँ वाला देश बना दिया। गोमाता को पशु, गंगामाता को पानी और भारत माता को भोग भूमि बनाने का विदेशी षडयंत्र देश के ही गोघाती नेताओं द्वारा जारी है। यहां तक की अब तो कांग्रेस के वरिष्ठ नेता कसाइयों के मंच पर आकर गौवंश के कत्ल की खुले आम वकालत कर रहे हैं। नेहरू से लेकर राव और पवार तक के गौ विरोधी चालचलन से सिद्ध हो गया है।

क्रूर कसाई-आइ एस आई और कांग्रेस आई।
देश के दुश्मन चोर-चोर तीनो मौसेरे भाई।।

सूटकेस और हिन्दूविरोधी मूर्खता के रास्ते से प्रवेश करके नित नये यांत्रिक कत्ल खाने देश को सांस्कृतिक एवं आर्थिक पतन के गहरे गर्त में धकेलने का काम कर रहे है।

गोमाता की महिमा अनंत है। एक बड़े ग्रंथ में भी गाय का धार्मिक, ऐतिहासिक, वैज्ञानिक और आर्थिक विवेचन नहीं समा सकता। प्रस्तुत चित्रों में उनकी झलक मात्र देने का प्रयास किया है।

हिन्दू राष्ट्र के महानायक पूज्य श्री अशोक जी सिंघल एवं गुरुवर आचार्य श्री गिरिराज किशोर जी, के कृपापूर्ण निर्देश पर गोरक्षा के महान यज्ञ में मैंने अपनी कलाहुति देने का यह तुच्छ प्रयास किया है। इस कार्य में मुझे श्री हुकुमचंद जी सावला, श्री के. एल. गोधाजी, श्री लक्ष्मी नारायण चांडक जी विनायक राव जी, देशपांडे, महेंद्र भाई भट्ट, श्री अजीत जी गाटा एवं श्री महेन्द्र भाई संगोई का प्रत्यक्ष स्नेह सहयोग मिला।

विभिन्न तथ्यों एवं संदर्भो के लिये, विनियोग परिवार, श्री सावला जी, श्रीमती मेनका गांधी, श्री नेमीचंदजी जैन, एवं अन्य गोप्रेमी संस्थाओं-लेखकों का मै विशेष रूप से आभारी हूं। अपने त्वरित कला कार्यो को स्थगित करके प्रथमतः यह काम करने की प्रेरणा देने वाले शुभचिंतक श्री स्वरूपचंदजी गोयल का भी मैं आभारी हूं।

चोर को चोर कहना ही चाहिये। बिना झिझके, बिना डरे। यह चोर के लिये बुरा हो सकता है पर समाज के हित में है। इसी आधार पर कुछ चित्र राजनैतिक दृष्टि से तीखे हो सकते हैं। सरकार ने गोभक्तों के उपवासों का उपहास उड़ाया है। इसीलिये तीखापन स्वाभाविक है।

गोभक्त राष्ट्र प्रेमी पाठक मेरी बालबुद्धि से किये गये इस प्रयास में हुई किसी त्रुटि या अन्य उचित सुझाव से अवगत अवश्य करायें

- सत्यनारायण मौर्य

३६, पिरोजा मेंशन, दुसरा माला, ग्रँट रोड स्टेशन के सामने (पूर्व)
मुंबई ४००००७. ☎ ३०७७५५१ / ३०१४३०६